दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7 | 3 हत्या कर टॉयलेट के ऊपर फेंका गया था ऋषभ का शव | 5 गोरखपुर में ब्लैक में आसानी से मिल रहा सिलेंडर, लाइन में मायूसी | 8 जून में आयरलैंड दौरे पर जाएगी भारतीय टीम

UPHIN/2023/90814 | वर्ष: 03, अंक: 39 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 23 मार्च, 2026

रामलला के दरबार पहुंची 'लखनऊ सुपर जायंट्स' की 20 सदस्यीय टीम,

कप्तान ऋषभ पंत ने विधिवत पूजा–अर्चना की

अयोध्या,संवाददाता। आईपीएल से पहले लखनऊ की टीम ने अयोध्या पहुंचकर राम मंदिर में दर्शन–पूजन किया। कप्तान समेत सभी खिलाड़ियों और स्टाफ ने नए सत्र में अच्छे प्रदर्शन की कामना की। मंदिर की भव्यता की सराहना की गई। इस आध्यात्मिक दौरे को टीम के लिए खास और प्रेरणादायक माना जा रहा है। आईपीएल शुरू होने से पहले लखनऊ सुपर जायंट्स की 20 सदस्यीय टीम अयोध्या पहुंची। जहां खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ ने रामलला के दर्शन–पूजन कर आशीर्वाद लिया। टीम के साथ फ्रेंचाइजी के मालिक संजीव गोयनका भी मौजूद रहे। सभी ने राम मंदिर में विधिवत पूजा–अर्चना की। आगामी सीजन में बेहतर प्रदर्शन की कामना की।

ईरान के दो वार और हांफने लगा अमेरिका

आखिर कैसे नरम पड़े ट्रंप के तेवर, अब युद्ध खत्म करने की कर रहे बात

ईरान के वार से बैकफुट पर ट्रंप

दिल्ली,एजेंसी। ईरान के दो बड़े हमलों कतर के गैस प्लांट और डिएगो गार्सिया सैन्य ठिकाना ने युद्ध में ट्रंप को बड़ा झटका दिया है। गैस हमले से वैश्विक ऊर्जा संकट और अमेरिकी कंपनियों को नुकसान हुआ। जबकि दूसरे हमले ने अमेरिका की सैन्य सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए। इन घटनाओं का आखिर ऐसा क्या असर पड़ा कि ट्रंप बिल्कुल बदल गए। आइए, विस्तार से समझते हैं कि ईरान को खत्म करने की बात करने वाले ट्रंप अब युद्ध खत्म करने की बात क्यों कर रहे हैं। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध ने अब नया मोड़ ले लिया है। ईरान के दो बड़े हमलों ने न सिर्फ क्षेत्रीय संतुलन बिगाड़ा है, बल्कि अमेरिका की रणनीति को भी हिला दिया है। कतर के गैस प्लांट पर हमला और हिंद महासागर में डिएगो गार्सिया जैसे सुरक्षित सैन्य ठिकाने को निशाना बनाने की कोशिश ने ट्रंप को कहीं न कहीं एक झटका जरूर दे दिया है। यह दोनों इतने बड़े कारण हैं कि ट्रंप को अब युद्ध खत्म करने की बातें कहनी पड़ रही है। ऐसे में आइए विस्तार से समझते हैं, कि ट्रंप इरान के इन दो वार से कैसे नरम पर गए। ट्रंप को पहला बड़ा झटका तब लगा जब ईरान ने कतर के रास लाफान गैस हब पर मिसाइल हमला किया। यह दुनिया के सबसे बड़े एलएनजी उत्पादन केंद्रों में से एक है और वैश्विक गैस सप्लाई का बड़ा हिस्सा यहीं से आता है। इस हमले से उत्पादन क्षमता करीब 17 प्रतिशत तक घट गई और अरबों डॉलर का नुकसान हुआ। इससे वैश्विक ऊर्जा बाजार भी हिल गया।

कतर हमले से अमेरिका को कैसे नुकसान

- कतर के गैस प्लांट में अमेरिकी कंपनियां शामिल, इसलिए सीधा आर्थिक नुकसान।
- एलएनजी उत्पादन घटने से वैश्विक गैस सप्लाई प्रभावित हुई।
- गैस और ऊर्जा कीमतों में तेजी से बढ़ोतरी हुई।
- यूरोप और एशिया में ऊर्जा संकट गहराया।
- भारत समेत कई देशों पर भी असर पड़ा, जिससे वैश्विक दबाव बढ़ा।
- अमेरिका की ऊर्जा और आर्थिक रणनीति पर असर पड़ा।
- सहयोगी देशों में भी बढ़ सकती है नाराजगी।
- अमेरिका पर युद्ध जल्द खत्म करने का दबाव बढ़ा।

> कल रात्रि चंद्रशेखर फरसा द्वारा एक वाहन को संदिग्ध मानकर रोका गया था लेकिन घना कोहरा होने के कारण पीछे से एक ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो गई. जो कंटेनर इनके द्वारा रोका गया उसमें किराने का सामान पाया गया, जो ट्रक पीछे से आया उसमें तार लदे हुए थे...इसमें गो तस्करी की कोई बात नहीं आई है

श्लोक कुमार
SSP, मथुरा

प्रेमानंद महाराज के दर्शन के लिए पहुंचीं राष्ट्रपति मुर्मु

मथुरा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु शुक्रवार को परिवार सहित संत प्रेमानंद महाराज के दर्शन के लिए वृंदावन पहुंचीं। राष्ट्रपति ने करीब 25 मिनट तक संत प्रेमानंद के साथ आध्यात्मिक चर्चा की। उन्होंने प्रेमानंद महाराज को जन्मदिन की बधाई भी दी। अपने तीन दिवसीय उत्तर प्रदेश के दौरान शुक्रवार को ही राष्ट्रपति ने वृंदावन स्थित नीब करौरी बाबा आश्रम में भी दर्शन-पूजन किया।

पैरालंपिक चैंपियन को अवॉर्ड देने के लिए घुटने पर बैठे पुतिन, तस्वीर वायरल!

डोनाल्ड ट्रंप ने किया ईरान से जंग में जीत का दावा, कहा- "हम जीत गए हैं"

कौन थे फरसा वाले बाबा? मौत को लेकर क्यों मचा इतना बवाल

मथुरा,संवाददाता। बाबा चंद्रशेखर की मौत के बाद शनिवार को लोगों का गुस्सा भड़क उठा। भीड़ ने हाईवे जाम कर पुलिस पर पथराव किया। पुलिस ने आंसू गैस दागे। बाबा गोरक्षा के लिए जाने जाते थे। उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के छाता में बाबा चंद्रशेखर उर्फ 'फरसा वाले बाबा' की मौत के बाद शनिवार सुबह लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। भीड़ ने दिल्ली–आगरा हाईवे जाम कर पुलिस पर पथराव किया, जिससे दहशत का माहौल बन गया। पथराव में पुलिस की गाड़ियां भी क्षतिग्रस्त हो गईं। हालात पर काबू पाने के लिए सेना की टुकड़ी ने मोर्चा संभाला है। हालात पर काबू पाने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले दागने पड़े। जानिए कौन थे फरसा वाले बाबा? जिनकी मौत के बाद भीड़ इतनी उग्र हो गई।

फरसा वाले बाबा की मौत पर बवाल

- गांव-गांव गो-सेवकों की टीम गठित की
- आठ साल की आयु में बन गए थे संत
- आजनोख में बाबा की एक विशाल गोशाला

जानें कौन थे बाबा चंद्रशेखर

बाबा चंद्रशेखर मूल रूप से फिरोजाबाद के गांव गोपाल का नगला के रहने वाले थे, पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह भी इसी गांव से आते हैं। गोरक्षा में फरसा लेकर बाबा चंद्रशेखर ने 'फरसा वाले बाबा' के रूप में अपनी पहचान बनाई। गांव–गांव गो–सेवकों की टीम गठित की। करीब 200 युवाओं की टीम है, जो गोसेवा के लिए हमेशा तत्पर रहती है। बाकी बड़ी संख्या में भक्त थे।

आठ साल की आयु में बन गए थे संत

बाबा चंद्रशेखर आठ साल की उम्र में संत बन गए थे। माता–पिता की मौत के बाद घर छोड़ दिया था, फिर संत हो गए। उसके बाद आयोध्या गए। श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन में भी हिस्सा लिया था। 20 साल तक वहां रहे, उसके बाद ब्रज में आ गए थे। यहां गोसेवा का संकल्प लिया और गोशाला चला रहे थे।

सम्पादकीय

अब तेल भी उछलेगा

बीते साल की तुलना में रसोई गैस (एलपीजी) की खपत 17.7 फीसदी कम हुई है, लेकिन संकट और मांग अब भी व्यापक हैं। एलपीजी की तुलना में अब तेल में आग लगने के आसार हैं, जिसकी हकीकत पेट्रोलियम मंत्रालय छिपा रहा है अथवा हरे–भरे आंकड़े पेश किए जा रहे हैं। बार–बार आश्वस्त किया जा रहा है कि पेट्रोल–डीजल के दाम नहीं बढ़ेंगे, जबकि अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, चीन, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस सरीखे बड़े देशों में पेट्रोल–डीजल महंगे करने पड़े हैं। पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका जैसे कर्जदार और विपन्न देशों से तुलना क्या करनी? भारत में पेट्रोल की 13 फीसदी और डीजल की 8 फीसदी से अधिक खपत बढ़ी है। ये अधिकृत संगठनों के अध्ययन के निष्कर्ष हैं। गौरतलब तथ्य यह है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत 17 मार्च को 103 डॉलर प्रति बैरल थी, लेकिन भारत ने 108.23 डॉलर के दाम पर तेल खरीदा है। बीती 16 मार्च को इंडियन बास्केट कच्चे तेल की कीमत ने आसमान छू लिया, जो 142.69 डॉलर प्रति बैरल के अनपेक्षित उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। फरवरी में कच्चे तेल की कीमत हमें 69 डॉलर पड़ी थी। वह मार्च में औसतन 108.23 डॉलर हो गई। एलपीजी के साथ–साथ तेल की कीमतों का यह उछाल भारतीय अर्थव्यवस्था को डांवाडोल कर सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि हमें कच्चा तेल 142 डॉलर की कीमत पर खरीदते रहना पड़ा, तो उससे महंगाई दर 8–10 फीसदी तक उछल सकती है। अभी तो यह 4 फीसदी के करीब बताई जा रही है। भारत की आर्थिक विकास दर लुढक़ कर 4–5 फीसदी पर आ सकती है। अलग–अलग तिमाही में विकास दर 8 फीसदी से अधिक भी रही है। भारत सरकार के आर्थिक सलाहकारों और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के दावे हैं कि 31 मार्च को समाप्त होने वाले 2025–26 वित्त वर्ष के दौरान विकास दर 7 फीसदी से अधिक रहेगी और आने वाले वित्त वर्ष में भी यह करीब 7 फीसदी रह सकती है, जो विश्व में सर्वाधिक है। अब ईरान युद्ध के प्रभावों के मद्देनजर क्या आर्थिकी होगी, हम उसका विश्लेषण कर रहे हैं।

कुछ ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में अभी से तोरी, भिंडी 150 रुपए किलो और नींबू 200 रुपए किलो बिकने शुरू हो गए हैं। प्याज, टमाटर कब महंगे होने लगेंगे, यह इस पर आश्रित है कि महंगाई दर कितनी बढ़ती है और हर वस्तु का परिवहन का खर्च कितना महंगा होता है? एलपीजी संकट के मद्देनजर औसतन रेस्तरां ने खान–पान के दाम 57 फीसदी तक बढ़ा दिए हैं। स्ट्रीट फूड भी 25 फीसदी महंगा हो गया है, लिहाजा आम आदमी पिसने लगा है। सूखे मेवे के दाम 25–45 फीसदी, खाद्य तेल के दाम 20 रुपए प्रति लीटर, दवाइयों के दाम 30 फीसदी तक बढ़ गए हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान भी महंगा हुआ है। विमानन कंपनियों ने भी 'फ्यूल सरचार्ज' थोप दिए हैं। इस तरह खुदरा और थोक महंगाई दरें बढऩी तय लग रही हैं। एक अनुमान है कि सरकार को 27.6 लाख करोड़ रुपए का घाटा हो सकता है, जाहिर है कि चालू खाता घाटा भी जीडीपी के 2.5 फीसदी तक पहुंच सकता है। बजट में सरकार का लक्ष्य सामने आया था कि चालू खाता घाटा 1 फीसदी के करीब रखा जाएगा। बहरहाल ईरान युद्ध के मद्देनजर ही वित्त मंत्री सीतारमण ने 1 लाख करोड़ रुपए का 'आर्थिक स्थिरीकरण कोष' बनाने की घोषणा की थी। इसके लिए आवश्यक धन मौजूदा विनियोग और अतिरिक्त आवंटन से आएगा। हालांकि सरकार से उम्मीद है कि वह चालू वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 4.4 फीसदी राजकोषीय घाटे का लक्ष्य हासिल करेगी। चुनौती केंद्र सरकार के सामने ही है कि वह पेट्रोल–डीजल के दाम कब तक बढ़ाने के निर्देश नहीं देगी? कच्चे तेल की कीमतें तो तमाम हदें पार कर चुकी हैं। हमारे दो जहाज भारतीय बंदरगाहों पर आ चुके हैं, जिनमें 92,700 मीट्रिक टन एलपीजी है। यह तो मात्र एक दिन की खपत के बराबर गैस है। अभी हमारे 22 और जहाज पश्चिमी खाड़ी में फंसे हैं।

गैस का संकट तो है

होर्मुज जलमार्ग पार करके एक भारतीय जहाज 'शिवालिक' 16 मार्च, सोमवार, को 'मुंडा पोर्ट' (गुजरात) पर पहुंचेगा। एक और जहाज 'नंदा देवी' 17 मार्च, मंगलवार, को 'कांडला बंदरगाह' (गुजरात) पर पहुंच सकता है। दोनों घरेलू गैस एलपीजी से लदे हुए हैं। दोनों जहाजों में 1.08 लाख मीट्रिक टन एलपीजी बताई गई है। यह भारत में मात्र एक दिन की गैस है। हमारी मासिक खपत 30 लाख टन है। एलपीजी के 11 अन्य जहाज भी होर्मुज पार करके भारत आने की उम्मीद में हैं। उनमें 4,15,000 टन एलपीजी बताई जा रही है। कच्चे तेल के 8 जहाज और एलएनजी के 3 जहाज भी प्रतीक्षारत हैं कि कब ईरान इजाजत देगा और वे भारत की तरफ प्रस्थान करेंगे। होर्मुज को लेकर भारत–ईरान का कोई नया करार नहीं हुआ है। भ्रामक सूचनाएं फैलाई जा रही हैं। भारत 2019 तक ईरान से कच्चा तेल आयात करता था। उसकी आपूर्ति में परिवहन और बीमा निःशुल्क होते थे। 'रुपए' की मुद्रा में तेल की आपूर्ति होती थी और ईरान के करीब 60,000 करोड़ रुपए भारतीय बैंकों में जमा थे। अमरीका ने ईरान पर पाबंदियां थोपीं, तो भारत पर भी दबाव बनाया गया कि वह ईरान से तेल न खरीदे। हमने अमरीका का आदेश मान लिया और ईरान से तेल का आयात बंद कर दिया। उसी तरह रूस के तेल को काफी कम किया गया। अब संकट के दौर में ईरान और रूस दोनों को 'पुरानी दोस्ती' की दुहाई दी जा रही है। वे दोस्ती निभा भी रहे हैं। आभार ईरान और रूस३! अब सरकार बार–बार दावे कर रही है कि एलपीजी की कोई कमी नहीं है, तो कुछ सवाल मौजू लगते हैं। जिनके घरों में पाइपलाइन से पीएनजी सप्लाई की जाती है, उन्हें एलपीजी कनेक्शन से वंचित क्यों किया जा रहा है? ऐसे कनेक्शन 1.62 करोड़ हैं। देश की आबादी में चुटकी भर संख्या३! बीती 13 मार्च को 88.8 लाख बुकिंग कराई गई, जबकि एक दिन की औसत बुकिंग 55 लाख रही है। क्या पूरी 'दहशतपूर्ण बुकिंग' है? राजधानी दिल्ली में ही होटल, रेस्तरां और ढाबों में इंडक्शन चूल्हों और डीजल की भ–यिों पर खाना क्यों बनने लगा है? सरकार ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के जरिए वैकल्पिक ईंधन की इजाजत क्यों दी है? लोगों ने घरों की छतों पर चूल्हा रख कर लकड़ी और कोयले पर खाना पकाना क्यों शुरू कर दिया है?

जहरीले प्रदूषण को आमंत्रण और पर्यावरण का छिलना शुरू३! एक पेशेवर सवाल यह है कि यदि एलपीजी का कोई संकट नहीं है, तो गैस डीलरों ने फोन क्यों बंद कर रखे हैं? हॉकर के फोन भी बंद हैं, क्यों? प्रधानमंत्री मोदी आजकल चुनावी जनसभाओं में व्यस्त हैं। वह बार–बार देश का आह्वान कर रहे हैं कि अफवाहों में मत आएं और अफवाहें फैलाएं भी नहीं। देश करीब 12 साल पहले कांग्रेस और विपक्ष को खारिज कर चुका है। लगातार तीन बार संसदीय जनादेश भाजपा–एनडीए को मिला है। नतीजतन मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री हैं। 12 साल एक लंबा वक्त होता है, लिहाजा अब प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार की जिम्मेदारी है कि देश संकट में घिरना नहीं चाहिए। यदि संकट वैश्विक है, तो देश को विश्वास में लेना चाहिए कि प्रयास किए जा रहे हैं, लिहाजा प्रधानमंत्री का देश को संबोधित करना अनिवार्य है। सरकार कबूल करे कि तेल–गैस का संकट है और उससे पार पाने की कोशिशें की जा रही हैं। प्रधानमंत्री ने कोरोना महामारी के दौरान कई बार देश को संबोधित किया था। अंततः कोरोना पराजित हुआ। यदि अब गैस एजेंसियों के बाहर जमा भीड़ कांग्रेस, वामपंथी, सपाई कार्यकर्ता या समर्थक हैं और गैस वाकई उपलब्ध है, तो उस भीड़ का संकट हल क्यों नहीं किया जा रहा? भीड़ कुछ हजार ही होगी। आखिर वे भी देश के नागरिक और एलपीजी के पंजीकृत उपभोक्ता हैं! आगामी दो–तीन माह के दौरान बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम, पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव हैं। इन राज्यों में कुल 18 करोड़ मतदाता हैं और 11 लाख से अधिक गैस सिलेंडर रोजाना सप्लाई किए जाते हैं। प्रधानमंत्री और भाजपा को एहसास होगा कि मतदाता का इस समय मानस क्या है? यदि देश में तेल–गैस का कोई भी संकट नहीं है, तो स्पष्ट बताएं। कांग्रेस को कोसने से संकट कम नहीं होने वाला है, प्रधानमंत्री जी! मीडिया में खबरें छप रही हैं कि कई जगहों पर रसोई गैस के लिए लंबी–लंबी कतारें लोगों की लग रही हैं। विशेषकर शहरी क्षेत्रों में रसोई गैस की कमी की खबरें आ रही हैं।

नए विषयों के कालेज जरूरी

स्कूली शिक्षण परिसरों में एक रैंकिंग के तहत हिमाचल सरकार ने अगर सीबीएसई पाठ्यक्रम को मंजूर किया, तो अब कालेजों की रैंकिंग भी एक नया सफर है। शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर कुल 134 कालेजों की विरासत में एक नया आयाम जोडऩा चाहते हैं। नैक की तर्ज पर राज्य के अपने तरीके से कालेजों की कैटेगिरी सामने आएगी। फिलहाल नैक की दृष्टि व मानदंडों के तहत महज 34 कालेज ही अपनी पात्रता बुलंद कर पाए हैं, फिर भी यह प्रयास है कि सभी परिसर, शैक्षणिक तरक्की के बिंदुओं पर गौरवान्वित हों। हिमाचल में शिक्षा को लेकर खूब सियासी नारेबाजी होती रही और यही वजह रही कि अब कुछ संस्थान अपनी प्रासंगिकता खो रहे हैं। सरकारी स्कूलों में सीबीएसई पाठ्यक्रम के प्रवेश ने यह साबित करना शुरू किया है कि अभिभावक भी गंभीरता से सरकार के प्रयास को साधुवाद देकर इनमें लौटने का कारण समझ रहे हैं। इसी तरह कालेजों को भी अपनी बुनियाद को साबित करने का अवसर मिलना चाहिए। ऐसे में ग्रामीण, शहरी व विशिष्ट स्थानों के कालेजों के हिसाब बदलने होंगे। ग्रामीण कालेजों में छात्रों का मनोबल व समर्थन बढ़ाने के लिए इन्हें सीधे करियर से जोडऩा चाहिए, जबकि शहरी कालेजों के आदर्श व पाठ्यक्रम वैश्विक दृष्टि के अनुरूप हों तो पढ़ाई की औपचारिकता से कहीं आगे स्टार्टअप, स्वावलंबन और अनुसंधान का ढांचा मजबूत होगा। तीसरे कालेज अपनी विशिष्टता, लोकेशन व प्रमाणिक इतिहास की वजह से ऐसा स्थान रखते हैं और जिन्हें विषय विशेष के राज्य स्तरीय परिसर बना देना चाहिए। ये वे कालेज हैं जहां छात्र संख्या तीन से छह हजार तक पहुंच रही है। सभी प्रकार के कालेजों में प्रवेश की शर्तें, परिवेश और रैंकिंग के मुताबिक होंगी, तो इन परिसरों की प्रासंगिकता भी बढ़ेगी। ग्रामीण परिवेश में सामुदायिक कालेजों के तहत कृषि, बागबानी, कौशल विकास के विषय प्राथमिक बन जाएं तो छात्रों को आगे बढऩे का रास्ता मिलेगा।

उदाहरण के लिए अगर पौंग बांध के किनारे स्थित नगरोटा सूरियां कालेज को कालेज ऑफ फिशरीज स्टडी बना दिया जाए, तो वहां शिक्षा सीधे प्रोफेशन में तबदील हो जाएगी। इसी तरह खेल छात्रावासों के करीब कालेज परिसरों में स्पोर्ट्स विंग स्थापित कर देने चाहिएं। चंबा कोलज का योगदान बच्चों के हुनर में धरोहर संस्कृति व कलात्मक पहलुओं पर हो, तो पारंपरिक ज्ञान में वैज्ञानिक वृद्धि होगी और छात्र सीधे कला वस्तुओं के उत्पादन में अपने लिए रोजगार चुन लेंगे। राज्य स्तरीय कालेजों की शिनाख्त में शिमला, धर्मशाला, मंडी, सोलन, कुल्लू, हमीरपुर, ऊना व नाहन जैसे कालेजों को एक या इससे अधिक विषयों के विशिष्ट कालेज बना देना चाहिए। हिमाचल की उच्च शिक्षा में अध्ययन की एक परिपाटी तो कालेजों को स्नातकोत्तर बना कर देखी गई, लेकिन इससे विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास रुक गया। आखिर क्यों अभिभावक बच्चों को दिल्ली, चंडीगढ़, शिमला, मंडी, धर्मशाला या सोलन जैसे शहरों में भेजना चाहते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में हिमाचल में खुले सरकारी व निजी विश्वविद्यालयों के स्थल चयन से लेकर उनके औचित्य पर सवाल उठ रहे हैं। बीएड व इंजीनियरिंग कालेजों का अनावश्यक विस्तार अब छात्रों की मैरिट को नहीं चमका रहा है। केंद्रीय विश्वविद्यालय का औचित्य और इतिहास यूं तो धर्मशाला के नाम से जुड़ा है, लेकिन आज तक इसे सियासी खिलौना बनाकर जदरांगल परिसर का निर्माण ही नहीं हुआ। अभिभावकों व छात्रों की रुचि से ही शिक्षण संस्थान प्रतिष्ठित होते हैं। इसलिए रैंकिंग के साथ यह सर्वेक्षण भी हो कि हिमाचल के छात्र किन स्थानों पर अपनी शैक्षणिक ऊर्जा को परिमार्जित करना चाहते हैं। प्रदेश को कुछ कालेजों को स्पोर्ट्स, आर्ट एंड म्यूजिक, डिफेंस स्टडीज तथा औद्योगिक स्टडीज के कालेजों में पहचान दिलानी चाहिए। बीबीएन क्षेत्र में उद्योगों से जुड़े विविध विषयों, मार्केटिंग, अकाउंटिंग तथा पर्यावरणीय विषयों से सुसज्जित संस्थान विकसित करना चाहिए। इसी तरह शहरीकरण तथा बाजारबाद के दौर में पैदा हो रहे रोजगार पर केंद्रित कालेज भी खोला जा सकता है।

चुनावी दुराग्रह के तबादले

चुनाव होने हैं, शीर्ष अधिकारियों की अग्नि–परीक्षा नहीं होनी है। अधिकारी भाजपाई या तृणमूल के बंधक नहीं होते। वे कानून और संविधान के प्रति जवाबदेह होते हैं। कोई अपवाद हो सकता है कि 'काली भेड़' साबित हो। उसे दंडित किया जा सकता है। उसका तबादला किसी 'काले पानी' की तरफ किया जा सकता है, लेकिन पश्चिम बंगाल में जिस तरह वरिष्ठ आईएएस और आईपीएस के तबादले किए गए हैं, वे न तो न्यायसंगत हैं और न ही निरपेक्ष हैं। चुनाव आयोग ने अपराह्न 4 बजे चुनावों की तारीखें घोषित की हैं और गहरी रात, अर्थात् आधी रात, में बंगाल के मुख्य सचिव, गृह सचिव, पुलिस महानिदेशक, कानून–व्यवस्था के प्रमुख, कोलकाता के पुलिस आयुक्त आदि के एक साथ तबादले कर दिए गए। हम मानते हैं कि संविधान का अनुच्छेद 324 चुनाव आयोग को व्यापक शक्तियां देता है, लेकिन ये तबादले राजनीतिक मंशा और दुराग्रह से किए गए हैं। यह भी सर्वोच्च अदालत का फैसला है कि ऐसे शीर्ष अधिकारियों के तबादले दो साल से पहले नहीं किए जा सकते। ये अधिकारी अपने–अपने क्षेत्र में वरिष्ठतम होते हैं और संघ लोक सेवा आयोग इनकी अनुशंसा करता है। कोई राजनीतिक बॉस इनका नियोक्ता नहीं है। सवाल यह भी है कि चुनाव आयोग को कैसे पता कि ये अधिकारी निष्पक्ष चुनाव और हिंसामुक्त माहौल में चुनाव नहीं करा सकते अथवा ये सभी अधिकारी मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के वफादार हैं? आयोग ने एक ही झटके में बंगाल की शीर्ष नौकरशाही को हिला कर रख दिया। क्या रोजमर्रा का प्रशासन चुनाव आयोग चलाएगा? यदि बंगाल में प्रशासनिक बदलाव किया गया है, तो तमिलनाडु और केरलम में ऐसा क्यों नहीं किया गया? असम में दिखावे को पांच जिलों के एसएसपी बदले गए हैं। संदेह होता है कि चुनाव आयोग किसी की 'कठपुतली' बनकर काम कर रहा है। भारत के लिए यह विडंबना और दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि हमारा चुनाव आयोग वैश्विक स्तर पर एक उदाहरण रहा है और विभिन्न देशोंनके प्रतिनिधि हमारे चुनावों के दौरान 'पर्यवेक्षक' की भूमिका में होते हैं। बेशक बंगाल में राजनीतिक हिंसा का पुराना इतिहास रहा है। पहले वामपंथी गांव–गांव, कस्बा–दर–शहर हत्याएं कराते थे। अब 2011 से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का राजनीतिक काडर हत्याएं कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी सार्वजनिक मंच से इन राजनीतिक हिंसाओं का उल्लेख कर चुके हैं। लोकसभा चुनाव में 7 ऐसी हत्याएं की गईं और 740 लोग घायल हुए। उनमें से जिंदा बचने वालों का कोई अधिकृत आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। घर तक जला दिए गए। हत्या के बाद शवों को पेड़ से लटकाया जाता रहा। केरलम में तो हिंसा का ऐसा बर्बर रूप है कि विरोधी पक्ष के सक्रिय कार्यकर्ताओं और नेताओं की टांगें तक तोड़ कर उन्हें अपाहिज बना दिया जाता है। कोई भी नौकरशाह इस राजनीतिक हिंसा को रोक नहीं सकता। चुनाव आयोग मुगालते में होगा! तमिलनाडु में भी द्रविड़ बनाम हिंदू और गैर–द्रविड़ के दरमियान उग्रता, क्रूरता के कई उदाहरण सामने आते रहे हैं। उन राज्यों के मुख्य सचिव, गृह सचिव और पुलिस महानिदेशक सरीखे शीर्षतम नौकरशाहों को क्यों नहीं बदला गया? सिर्फ इतना ही नहीं, लोकसभा चुनाव, 2024 से पहले गुजरात, उप्र, बिहार, हिमाचल, झारखंड, उत्तराखंड आदि राज्यों में सिर्फ गृह सचिव बदले गए थे। हिमाचल और झारखंड को छोड़ कर शेष राज्यों में भाजपा–एनडीए सरकार थी और आज भी है। जब महाराष्ट्र, हरियाणा, उप्र, मप्र आदि में विधानसभा चुनाव थे और विपक्षी कांग्रेस ने कुछ वरिष्ठ अधिकारियों को बदलने की मांग की थी, तो चुनाव आयोग ने खारिज क्यों कर दिया था?

भाईचारे और खुशियों की खूबसूरत तस्वीरें

हत्या कर टॉयलेट के ऊपर फेंका गया था ऋषभ का शव

गोरखपुर,संवाददाता। गगहा थाना क्षेत्र के रावतपार गांव में 25 वर्षीय ऋषभ यादव उर्फ बब्बी का शव बृहस्पतिवार सुबह आटा चक्की के पीछे बने शौचालय के टिनशेड पर पाया गया। शव निर्वस्त्र था और हाथ में कंडोम का पैकेट मिला। कपड़े पास के पेड़ पर टंगे हुए थे। यह दृश्य देखकर ग्रामीणों और परिजनों में सनसनी फैल गई। परिवार के लोगों ने इसे हत्या कर शव को शौचालय के ऊपर रखे जाने की आशंका जाहिर की थी। गगहा थाना क्षेत्र के रावतपार गांव निवासी ऋषभ यादव उर्फ बब्बी (25) की हत्या के बाद उसके शव को शौचालय के टिनशेड पर रख गया था। इसका पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सिर में चोट लगने से मौत की बात सामने आई है। ऋषभ की पत्नी ने गांव की रहने वाली पूर्व प्रेमिका और उसके परिजनों पर हत्या का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है। गगहा थाना पुलिस घटना से जुड़े सभी बिंदुओं की जांच कर रही है।

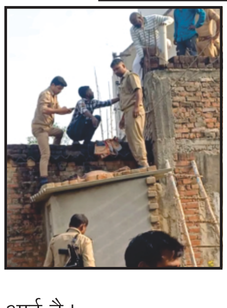

जानकारी के अनुसार, गगहा थाना क्षेत्र के रावतपार गांव में 25 वर्षीय ऋषभ यादव उर्फ बब्बी का शव बृहस्पतिवार सुबह आटा चक्की के पीछे बने शौचालय के टिनशेड पर पाया गया। शव निर्वस्त्र था और हाथ में कंडोम का पैकेट मिला। कपड़े पास के पेड़ पर टंगे हुए थे। यह दृश्य देखकर ग्रामीणों और परिजनों में सनसनी फैल गई। परिवार के लोगों ने इसे हत्या कर शव को शौचालय के ऊपर रखे जाने की आशंका जाहिर की थी। दो डॉक्टरों की पैनल ने वीडियोग्राफी के साथ पोस्टमार्टम किया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने इस बात की पुष्टि की कि मौत सिर पर चोट लगने से हुई है। इसके बाद पुलिस ने हत्या की धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस रावतपार चौराहे और गांव की गलियों में लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाल रही है ताकि घटना के समय की गतिविधियों का सुराग मिल सके। पुलिस ने पुराने मामले से जुड़े एक आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। गांव में तनाव को देखते हुए भारी पुलिस बल तैनात है। वहीं, दबी जुबान में कुछ ग्रामीणों का यह भी कहना है कि मामले को गलत दिशा में मोड़ने की कोशिश की जा रही है।

शव देख बेहोश हुई पत्नी और मां

ऋषभ यादव की मौत ने परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है। वर्ष 2019 में डडवापार की रहने वाली चांदनी से ऋषभ की शादी हुई थी। दंपती के दो छोटे बेटे अनवीर (6) और आश्विक (3) हैं, जिनके सिर से पिता का साया उठ गया। शव देखने पर पत्नी और मां बेहोश हो गईं, वहीं 15 वर्षीय छोटा भाई युवराज और बहनें पूजा व अर्चना का रो–रोकर बुरा हाल है।

गोरखपुर में 9 साल में 10 हजार करोड़ खर्च

नौ वर्षों में 10 हजार करोड़ से 1500 किमी सड़कें बनल।
शहर की कनेक्टिविटी सुधरी, यातायात दबाव कम हुआ।
कई फ्लाईओवर, ओवरब्रिज परियोजनाओं पर काम जारी।

2925–26 में पूर्ण हुई प्रमुख परियोजनाएं

धर्मशाला से गोरखनाथ मंदिर मार्ग पर नया गोरखनाथ ओवरब्रिज (लागत 137.83 करोड़ रुपये)
बरगदवा–नकहा रेल ओवरब्रिज (लागत 152.19 करोड़ रुपये)
खजांची चौराहा फ्लाईओवर (लागत 96.50 करोड़ रुपये)
रामगढ़ताल नौकायन से देवरिया बाईपास तक फोरलेन में चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण (लागत 67.35 करोड़)
बालापार टिकरिया मार्ग स्थित रेल समपार पर ओवरब्रिज (लागत 84.87 करोड़ रुपये)

आगामी चार माह में पूरी होने वाली निर्माणाधीन प्रमुख परियोजनाएं

जंगल कौड़िया–सोनौली फोरलेन मार्ग (लागत 2555.50 करोड़ रुपये)
टीपीनगर से पैडलेगंज तक सिक्सलेन फ्लाईओवर (लागत 429.49 करोड़ रुपये)
नौसड़ से पैडलेगंज सिक्सलेन मार्ग (लागत 297.29 करोड़ रुपये)
भटहट से बासस्थान मार्ग के फोरलेन में चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण (लागत 689.35 करोड़ रुपये)
देवरिया बाईपास का फोरलेन में चौड़ीकरण व सुदृढ़ीकरण (लागत 399.24 करोड़ रुपये)
जिला जेल बाईपास मार्ग का फोरलेन में चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण (लागत 369.04 करोड़ रुपये)
पैडलेगंज से फिराक गोरखपुरी चौक होते हुए बेतियाहाता चौराहे तक फोरलन(लागत 277.78 करोड़ रुपये)
पिपराइच–गोरखपुर मार्ग का फोरलेन में चौड़ीकरण (लागत 942.44 करोड़)
चारफाटक–असुरन मार्ग का फोरलेन में चौड़ीकरण (लागत 278.89 करोड़)
बालापार–टिकरिया–गांगी बाजार मार्ग का फोरलेन में चौड़ीकरण (लागत 838.05 करोड़ रुपये)
एचएन सिंह चौराहे से हड़हवा फाटक होते हुए गोरखनाथ मंदिर मार्ग तक टूलेन/फोरलेन (लागत 245.44 करोड़ रुपये)
हड़हवा फाटक समपार संख्या 2 स्पेशल पर फोरलेन फ्लाईओवर (लागत 201.24 करोड़ रुपये)
चौरीचौरा–भोपा बाजार में समपार संख्या 147बी पर रेल ओवरब्रिज, (लागत 49.22 करोड़ रुपये)

संवाददाता, गोरखपुर। गोरक्षनगरी में बीते नौ वर्षों में सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में उल्लेखनीय विस्तार दर्ज किया गया है। प्रशासनिक आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2017 के बाद से अब तक करीब 10 हजार करोड़ रुपये की लागत से लगभग 1500 किलोमीटर लंबी प्रमुख सड़कों का निर्माण और चौड़ीकरण किया गया है। इसके मुकाबले 2017 से पहले के पांच वर्षों में करीब 325 करोड़ रुपये खर्च कर लगभग 450 किलोमीटर सड़कों का निर्माण हुआ था। सड़क नेटवर्क में इस तेजी से विस्तार का असर शहर की कनेक्टिविटी और यातायात व्यवस्था पर स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है। शहर के बाहरी हिस्सों को जोड़ने वाली अधिकांश प्रमुख सड़कें अब फोरलेन में तब्दील हो चुकी हैं, जबकि शहर के भीतर भी कई महत्वपूर्ण मार्गों का चौड़ीकरण किया गया है। इसके साथ ही प्रमुख चौराहों का भी विस्तार किया गया, जिससे यातायात दबाव कम करने में मदद मिली है। पहले खराब सड़कों और सीमित कनेक्टिविटी के कारण आवागमन में दिक्कतें और व्यापारिक गतिविधियों पर असर पड़ता था। अब गोरखपुर से लखनऊ, वाराणसी, बिहार, नेपाल, देवरिया और कुशीनगर तक बेहतर सड़क संपर्क स्थापित हुआ है। इससे न केवल यात्रा समय में कमी आई है, बल्कि आसपास के क्षेत्रों के साथ आर्थिक गतिविधियों में भी तेजी देखी जा रही है। बीते वर्षों में कई प्रमुख परियोजनाएं पूरी हुईं , जिनमें गोरखनाथ ओवरब्रिज, बरगदवा–नकहा रेल ओवरब्रिज, खजांची चौराहा फ्लाईओवर और रामगढ़ताल से देवरिया बाईपास तक फोरलेन चौड़ीकरण शामिल हैं। इन परियोजनाओं से शहर के भीतर जाम की समस्या कम करने में मदद मिली है। वर्तमान में जंगल कौड़िया–सोनौली फोरलेन मार्ग, टीपीनगर से पैडलेगंज तक सिक्सलेन फ्लाईओवर, नौसढ़–पैडलेगंज सिक्सलेन मार्ग सहित कई परियोजनाओं पर काम चल रहा है, जो इसी माह पूरी हो जाएंगी। अप्रैल में इनके लोकार्पण की तैयारी है। इसके अलावा राप्ती नदी पर अतिरिक्त लेन के पुल और विभिन्न रेल ओवरब्रिज भी निर्माणाधीन हैं, जिनका उद्देश्य यातायात को और सुगम बनाना है।

'जलने वालों ने हमें जीते जी मार डाला

पूरे परिवार को खत्म कर दिया' भाजपा नेता राजकुमार की पत्नी का दर्द

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर में प्रॉपर्टी डीलर राजकुमार चौहान की हत्या के बाद पत्नी सुशीला ने गंभीर आरोप लगाए हैं। सुशीला का कहना था कि जलने वालों ने पति को ही नहीं पूरे परिवार को खत्म कर डाला। सुशीला कहती हैं–तीन साल पहले पार्षद का चुनाव हुआ था। पति हार गए थे। धर्मदेव चौहान जीत गए थे। उसी के बाद से रंजिश बढ़ती गई।

गोरखपुर के चिलुआताल थाना क्षेत्र के बरगदवा में मंगलवार सुबह प्रॉपर्टी डीलर राजकुमार चौहान की हत्या ने सिर्फ एक जान नहीं ली बल्कि पूरे परिवार की दुनिया उजाड़ दी। घर में पसरा सन्नाटा, रोते–बिलखते बच्चे और बेसहारा खड़ी पत्नी भी बार–बार यही दोहरा रहीं थीं। पत्नी सुशीला ने बिलखते हुए कहा–हमारा सब कुछ लुट गया। पति राजनीति में आगे बढ़ रहे थे। इससे जलने वालों ने उनके साथ पूरे परिवार को खत्म कर डाला..। सुशीला कहती हैं–तीन साल पहले पार्षद का चुनाव हुआ था। पति हार गए थे। धर्मदेव चौहान जीत गए थे। उसी के बाद से रंजिश बढ़ती गई। दो साल पहले पार्षद धर्मराज के लोगों ने उनके भतीजे नीरज के साथ मारपीट की थी। इसमें भतीजे को पुलिस ने चौकी में बैठा लिया था। पति जब उसे छुड़ाने गए तो उनको भी फर्जी केस में फंसाकर जेल भेज दिया गया था। एक महीना जेल काटकर आए थे, तब से ही ये लोग दुश्मनी निकालने में लगे थे।

परिजन जिला प्रशासन के रवैए से नाराज

परिजनों ने जिला प्रशासन के रवैए पर भी सवाल उठाए हैं। सुशीला बताती हैं–बुधवार को जिलाधिकारी और एसएसपी ने मिलने के लिए बुलाया था। अफसरों ने कहा कि बच्चों को कहां पढ़ाना है, बताओ। बिजनेस के लिए लोन दिलाएंगे। मैंने उनसे कहा कि जब पति ही नहीं रहा तो लोन लेकर क्या करेंगे। बच्चों की पढ़ाई कैसे होगी। परिजनों ने आरोप लगाया कि 36 घंटे बाद भी कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। मुख्यमंत्री ने अपराधियों को मिट्टी में मिलाने की बात कही थी, लेकिन अब तक कुछ नहीं हुआ। शासन–प्रशासन से कोई मदद नहीं मिली। हालांकि उन्होंने यह भी बताया कि मंत्री दारा सिंह चौहान ने 10 लाख रुपये की मदद देने की बात कही है। परिवार का दावा है कि आरोपियों ने पहले भी कई बार धमकी दी थी।

योगी जी से है फरियाद...आरोपियों के घर पर चले बुलडोजर

सुशीला ने कहा–मेरा परिवार सड़क पर आ गया। मुख्यमंत्री योगी से फरियाद है मेरी, इन अपराधियों को मार डालना चाहिए, उनके घर पर बुलडोजर चलना चाहिए। जैसे मेरा पति मरा है, वैसे ही उनका भी एनकाउंटर होना चाहिए। उन्होंने सीबीआई जांच की मांग भी की।

पिता बोले–बचाए जा रहे असल गुनहगार

हत्याकांड में दो डंपर चालकों की गिरफ्तारी कर पुलिस ने मामले के पर्दाफाश किया है, लेकिन परिजन इससे संतुष्ट नहीं हैं। पिता जंगीलाल ने आरोप लगाया कि असली साजिशकर्ता अभी भी बाहर हैं, जबकि निर्दोषों को फंसाया जा रहा है।

गोरखपुर विविद्यालय के कुलपति के लिए राजभवन ने मांगा आवेदन, 15 अप्रैल तक कर सकते हैं अप्लाई

संवाददाता, गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति प्रो. पूनम टंडन का कार्यकाल चार सितंबर को समाप्त होगा लेकिन चयन की प्रक्रिया राजभवन ने पांच महीने पहले ही शुरु कर दी है। राजभवन ने कुलपति पद के आवेदन आमंत्रित कर लिया है। आवेदन करने के लिए अर्ह अभ्यर्थियों को 15 अप्रैल तक का समय दिया है। अभ्यर्थी 15 अप्रैल तक जन भवन की वेबसाइट पर आवेदन कर सकते हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की प्रो. पूनम टंडन ने चार सितंबर 2023 को विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। इस तरह उनका कार्यकाल पूरा होने में लगभग करीब साढ़े पांच महीने का समय शेष रह गया है। किसी भी विश्वविद्यालय में कुलपति पद के लिए नियुक्ति की प्रक्रिया सामान्य तौर पर लगभग छह महीने पहले शुरू हो जाती है। इसे देखते हुए ही राज्यपाल के कार्यालय की ओर से नियुक्ति प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति पद की नियुक्ति लिए जन भवन की ओर से जारी विज्ञापन में कहा गया है कि कुलपति का कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष के लिए होगा। इस पद के लिए केवल वही व्यक्ति पात्र होगा जिसकी आयु 65 वर्ष से कम हो। कुलपति विश्वविद्यालय का प्रधान कार्यपालक और शैक्षणिक अधिकारी होता है, इसलिए अभ्यर्थी में उच्च कोटि की क्षमता, सत्यनिष्ठा, नैतिकता एवं संस्थागत वचनबद्धता होनी चाहिए। अभ्यर्थी को विख्यात शिक्षाविद होने के साथ–साथ ठोस प्रशासनिक अनुभव भी होना चाहिए।

ईद पर मथुरा में बवाल

हाईवे पर पथराव, एसडीएम और पुलिस की गाड़ियां तोड़ी, सेना की टुकड़ी ने संभाला मोर्चा

मथुरा,संवाददाता। ब्रज के प्रसिद्ध गौ–सेवक चंद्रशेखर उर्फ 'फरसा वाले बाबा' की मौत हो गई। आरोप है कि गौ–तस्करों ने गाड़ी से कुचलकर उनकी हत्या कर दी। घटना से क्षेत्र में भारी आक्रोश फैल गया। पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए नाकाबंदी कर दी है। कान्हा की नगरी ब्रज में ईद वाले दिन बवाल मच गया। आरोप है कि मथुरा के थाना कोसीकलां के अंतर्गत कोटवन चौकी क्षेत्र के नवीपुर में बीती रात गौ–तस्करों ने विख्यात गौ–सेवक चंद्रशेखर, जिन्हें क्षेत्र में 'फरसा वाले बाबा' के नाम से जाना जाता था, की गाड़ी से कुचलकर हत्या कर दी। घटना के बाद पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है और तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है। इस दौरान आगरा–दिल्ली हाईवे जाम कर दिया गया। आक्रोशित भीड़ ने हाईवे पर पथराव कर दिया। इस पथराव में एसडीएम और पुलिस की गाड़ियां भी क्षतिग्रस्त हो गईं। हालात पर काबू पाने के लिए सेना की टुकड़ी ने मोर्चा संभाला है।

कौन थे 'फरसा वाले बाबा'? जिनकी मौत पर मथुरा में हुआ बवाल

- असली नाम चंद्रशेखर था. बाबा बुलाते थे लोग
- गौ-रक्षा के लिए अपने साथ फरसा रखते थे
- कोसीकलां के आसपास गौरक्षा के लिए सक्रिय
- गौ-रक्षा के लिए फरसा वाली टीम भी बनाई

कैसे हुई मौत?

दावा है कि चंद्रशेखर बाइक से ट्रक सवार गौतस्करों का पीछा कर रहे थे. उन्होंने ट्रक को ओवरटेक कर सामने बाइक लगा दी. ड्राइवर ने रफ्तार बढ़ा दी और बाबा को कुचलते हुए फरार हो गया.

मथुरा में गो रक्षक की हत्या पर CM योगी सख़्त, कड़ी कार्रवाई के निर्देश

मथुरा में गो रक्षक 'फरसा वाले बाबा' की हत्या पर भारी बवाल मच गया है, जानकारी के मुताबिक गोतस्करों ने उन्हें ट्रक से कुचल दिया था. मामले का संज्ञान लेते हुए अब सीएम योगी ने सख़्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं, उन्होंने अधिकारियों को कड़ा एक्शन लेने का निर्देश देते हुए कहा कि "ज़िम्मेदार लोगों की जवाबदेही तय हो, आरोपियों को भी बख़्शा नहीं जाएगा"।

द पर मथुरा में बवाल, 'फरसा वाले बाबा' की गाड़ी से कुचलकर हत्या का आरोप, हाईवे पर आक्रोशित भीड़ ने किया पथराव

प्राप्त जानकारी के अनुसार, बाबा चंद्रशेखर को क्षेत्र में गौ–तस्करों की सक्रियता की सूचना मिली थी। वे अपनी टीम के साथ तस्करों का पीछा कर रहे थे। नवीपुर के समीप तस्करों ने क्रूरता की हदें पार करते हुए अपनी गाड़ी बाबा के ऊपर चढ़ा दी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की गंभीरता को देखते हुए छाता पुलिस ने मोर्चा संभाल लिया है।

बरसाना की ओर जाने वाले सभी रास्तों पर सघन नाकाबंदी कर दी गई है ताकि फरार आरोपियों को पकड़ा जा सके।

बाबा का पार्थिव शरीर उनके गांव अंजनोख स्थित बाबा की गोशाला पहुंचा, जहां हजारों की संख्या में ग्रामीण और गौ–भक्त जमा हैं।

बाबा 'फरसा वाले' अपने निडर स्वभाव और गौ–वंश की रक्षा के लिए ब्रज क्षेत्र में काफी लोकप्रिय थे। उनकी हत्या की खबर फैलते ही हिंदूवादी संगठनों और गौ–सेवकों में भारी रोष व्याप्त है। वहीं जैसे–जैसे भीड़ जुटती गई, आक्रोश बढ़ता गया। इस दौरान आगरा दिल्ली हाईवे पर आक्रोशित भीड़ ने पथराव करना शुरू कर दिया। अचानक हुआ पथराव से भगदड़ मच गई। हाईवे पर जाम लगने से फंसे वाहनों पर हुआ पथराव से लोग सहम गए। पुलिस ने मोर्चा संभाला, लेकिन भीड़ के आगे पुलिसकर्मियों के कदम भी पीछे हट गए। पथराव और आक्रोशित भीड़ पर काबू पाने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागने शुरू कर दिया। एसपी सिटी राजीव कुमार सिंह, एसपी ग्रामीण सुरेशचंद्र रावत, एडीएम प्रशासन अमरेश कुमार और एक वीआईपी ड्यूटी में अलीगढ़ से आए थाना प्रभारी की गाड़ी को निशाना बनाया गया। सभी अधिकारियों की गाड़ी के शीशे और खिड़कियां तोड़ दीं।

'आज फोन रखने वाला हर व्यक्ति मीडिया',

सुप्रीम कोर्ट ने किस बात को लेकर जताई गहरी चिंता? मोबाइल फोन को मीडिया बनाने पर सुप्रीम कोर्ट चिंतित। आरोपियों की निष्पक्ष सुनवाई पर गंभीर खतरा। पुलिस–मीडिया ब्रीफिंग के लिए SOP बनाने का निर्देश।

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने प्रत्येक व्यक्ति के मोबाइल फोन को मीडिया बनाने और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तुरंत वीडियो अपलोड करने की संक्रामक प्रवृत्ति पर गंभीर चिंता व्यक्त की। अदालत ने कहा कि ऐसी गतिविधियां आरोपियों की निष्पक्ष सुनवाई के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं। चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम पंचोली की पीठ ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह बात कही। याचिका में आरोप लगाया गया था कि पुलिस गिरफ्तार आरोपियों के वीडियो और तस्वीरें अपने सोशल मीडिया हैंडल पर अपलोड करती है, जिससे लोगों के मन में पूर्वाग्रह पैदा होता है। बाद में सबूतों के अभाव में बरी होने पर न्यायपालिका को दोषी ठहराते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने जताई चिंता

पीठ ने वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन की इस बात से सहमति जताई कि मोबाइल फोन रखने वाला हर व्यक्ति मीडिया बन गया है और कहा कि जब भी कोई दुर्घटना होती है तो लोग सामग्री बनाने के लिए अपने मोबाइल फोन निकाल लेते हैं। यहां तक कि जब कोई व्यक्ति सड़क पर खून बह रहा होता है। न्यायमूर्ति बागची ने याचिकाकर्ता से कहा कि पुलिस के सोशल मीडिया हैंडल के बारे में बात करने के बजाय पुलिस, पारंपरिक और सोशल मीडिया के लिए एक व्यापक तंत्र की तलाश करनी चाहिए। इसे सभी राज्यों में जांच में पारदर्शिता, सूचना के अधिकार और आरोपियों की निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार को संतुलित करने के लिए पुलिस–मीडिया ब्रीफिंग के संबंध में एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करने और उसका अनुपालन करने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा तीन महीने का समय दिया गया है।

जस्टिस बागची ने क्या कहा?

उन्होंने कहा, "बड़े कैनवास पर हमारा मानना है कि पुलिस को अपनी ब्रीफिंग के माध्यम से आरोपियों के खिलाफ पूर्वाग्रह पैदा नहीं करना चाहिए। पुलिस को एसओपी के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। लेकिन मीडिया, विशेष रूप से सोशल मीडिया और जनता के बारे में क्या? क्या उन्हें रोका जा सकता है? तुलनात्मक रूप से टीवी चैनल कहीं अधिक संयमित हैं, भले ही कोई उनके विचारों से असहमत हो सकता है।" सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि सोशल मीडिया पर ऐसे टैब्लॉयड हैं ।

गैस सिलिंडर किल्लत: घरेलू गैस की अवैध रिफिलिंग का भंडाफोड़

गोरखपुर,संवाददाता। जांच के दौरान एक व्यक्ति घरेलू कुकिंग गैस सिलेंडरों से छोटे सिलेंडरों में गैस भरते हुए पाया गया। पूछताछ में उसने अपना नाम सिद्धार्थ रौनियार, निवासी शिवनगर कॉलोनी, बशारतपुर बताया। उसने कहा कि दुकान उसके बड़े भाई शिवम रौनियार की है, जो वर्तमान में वृंदावन गए हैं। बशारतपुर क्षेत्र में अवैध गैस रिफिलिंग के धंधे का पूर्ति विभाग ने भंडाभोड़ किया। स्पोर्ट्स कॉलेज रोड स्थित शिव मंदिर के पास एक दुकान पर टीम ने मौके से घरेलू गैस सिलेंडर और रिफिलिंग उपकरण बरामद किए।

क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी के नेतृत्व में पूर्ति निरीक्षकों की टीम ने सुबह "रौनियार किचन शॉप एंड रिपेयरिंग सेंटर" पर कार्रवाई की। जांच के दौरान एक व्यक्ति घरेलू कुकिंग गैस सिलेंडरों से छोटे सिलेंडरों में गैस भरते हुए पाया गया। पूछताछ में उसने अपना नाम सिद्धार्थ रौनियार, निवासी शिवनगर कॉलोनी, बशारतपुर बताया।

उसने कहा कि दुकान उसके बड़े भाई शिवम रौनियार की है, जो वर्तमान में वृंदावन गए हैं। मौके से 14.2 किलोग्राम के इंडेन गैस के चार भरे व दो खाली सिलेंडर, भारत गैस के तीन भरे व एक आंशिक भरे सिलेंडर, दो रिफिलिंग मशीन, एक वेटिंग मशीन और पांच किलोग्राम के दो छोटे सिलेंडर बरामद किए गए। टीम

ने सभी सिलेंडर और उपकरण जब्त कर उन्हें हिमांशु गैस सर्विस, राप्तीनगर के सुपुर्द कर दिया। जिला पूर्ति अधिकारी रामेंद्र प्रताप सिंह के अनुसार यह आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 का उल्लंघन है और आरोपी के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है। चिलुआताल थाने में प्राथमिकी दर्ज करवाई जा रही है।

होम डिलीवरी कम, एजेंसियों पर ज्यादा भीड़

शहर में घरेलू गैस सिलेंडर की आपूर्ति व्यवस्था पटरी पर नहीं आ पा रही है। होम डिलीवरी कम होने से उपभोक्ताओं की भीड़ एजेंसियों पर लगातार बढ़ रही है, जिससे लोगों को घंटों लाइन में लगना पड़ रहा है। शुक्रवार को शहर के कई एजेंसियों और गोदामों पर उपभोक्ताओं की भीड़ रही। सिलेंडर की कालाबाजारी भी

कम नहीं हुई है। उपभोक्ताओं का आरोप है कि बुकिंग के बावजूद समय पर होम डिलीवरी नहीं हो रही, जबकि एजेंसियों पर सीमित संख्या में सिलेंडर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इससे आम लोगों की परेशानी बरकरार है। शहर के ट्रांसपोर्टनगर स्थित गंगा गैस एजेंसी और शाहपुर स्थित प्रज्ञा गैस एजेंसी पर लंबी लाइन लगी रही। वहीं, सूर्यकुंड इंडेन गैस गोदाम पर सात–आठ दिन पहले बुकिंग किए गए उपभोक्ताओं को सिलेंडर नहीं मिला। उपभोक्ता तिवारीपुर के शिवकुमार शुक्ला ने बताया कि 13 मार्च को बुकिंग कराने के बाद चार दिन तक पर्ची के लिए दौड़ना पड़ा। पर्ची मिली लेकिन सिलेंडर खत्म हो चुका था। परवेज अहमद ने बताया कि 12 मार्च को बुकिंग के बाद तीन दिन तक केवाईसी कराने में समय गया, लेकिन सिलेंडर मिलने से पहले ही खेप खत्म हो गई।

आपूर्ति विभाग ने एजेंसियों को निर्देश दिए हैं कि गोदाम से सीधे वितरण और होम डिलीवरी दोनों माध्यमों से बराबर–बराबर सिलेंडर उपलब्ध कराए जाएं। होम डिलीवरी व्यवस्था बेहतर करने और पारदर्शिता बनाए रखने के निर्देश भी जारी किए गए हैं। जिला पूर्ति अधिकारी रामेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि निगरानी लगातार जारी है और शिकायत मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

शहर में छुपकर चल रहा अवैध रिफिलिंग का धंधा

शहर में घरेलू गैस सिलेंडरों से छोटे सिलेंडरों में अवैध रिफिलिंग का धंधा चुपके–चुपके चल रहा है। कार्रवाई के डर से संचालक अब अपनी दुकानें बंद कर ठिकाना बदल रहे हैं और बिना किसी जानकारी के अलग–अलग स्थानों पर यह काम कर रहे हैं।

शहर के बेतियाहाता, पादरी बाजार, बशारतपुर, असुरन, कुनराघाट आदि क्षेत्रों में यह अवैध रिफिलिंग का धंधा फल–फूल रहा है। सूत्रों के अनुसार कई दुकानदार दुकानें बंद कर लोगों के छोटे सिलेंडर में रिफिलिंग कर रहे हैं और दाम बढ़ाकर मोटी कमाई कर रहे हैं। बांसगांव में भी इसी तरह की कार्रवाई करते हुए विभाग ने एक दुकानदार को पकड़ा था। लगातार कार्रवाइयों से यह स्पष्ट है कि शहर में यह अवैध कारोबार संगठित तरीके से संचालित हो रहा है।

जिला पूर्ति अधिकारी रामेंद्र प्रताप सिंह का कहना है कि घरेलू गैस सिलेंडरों से अवैध रिफिलिंग न सिर्फ कानून का उल्लंघन है, बल्कि यह खतरनाक भी है और किसी बड़े हादसे का कारण बन सकता है। विभाग ने ऐसे कारोबारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और लोगों से इसकी सूचना तुरंत प्रशासन को देने की अपील की है।

डीएम ने किया निरीक्षण

डीएम दीपक मीणा ने गोरखपुर इंडेन सर्विस डोमिनगढ़ और जय शिव इंडेन, चरगांवा का निरीक्षण कर पेट्रोलियम उत्पादों की उपलब्धता और वितरण व्यवस्था का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पाया कि गैस सिलेंडरों का वितरण सुचारू रूप से किया जा रहा है। डीएम ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि कहीं भी किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न न हो और सभी उपभोक्ताओं को समय पर गैस उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए।

गोरखपुर में ब्लैक में आसानी से मिल रहा सिलेंडर, लाइन में मायूसी

गोरखपुर,संवाददाता। रसोई गैस सिलेंडर की कमी के बीच कालाबाजारी भी बढ़ती जा रही है। लाइन में लगने वाले ग्राहकों को भले ही मायूसी हाथ लग रही हो लेकिन ब्लैक में सिलेंडर आसानी से मिल जा रहा है। अधिकारी महानगर में वितरण व्यवस्था को दुरुस्त कराने में जुटे हैं इसलिए ग्रामीण क्षेत्र में मनमानी बढ़ती जा रही है। उरुवा बाजार, बड़हलगंज, सिकरीगंज, पिपराइच, पीपीगंज के एक लाख से ज्यादा ग्राहकों को सिलेंडर के लिए भटकना पड़ रहा है। इंडियन आयल और हिंदुस्तान पेट्रोलियम में सबसे ज्यादा समस्या है। इसका फायदा उठाकर ब्लैक में 16 सौ रुपये में सिलेंडर बेचा जा रहा है।
उरुवा बाजार संवाद सूत्र के अनुसार उरुवा स्थित मां लक्ष्मी इंडेन ग्रामीण वितरक के गोदाम पर तड़के तीन बजे से ही लाइन लगनी शुरू हो जा रही है। यहां 35 हजार ग्राहक पंजीकृत हैं। कभी सिलेंडर नहीं आने तो कभी कोई अन्य समस्या बताकर ग्राहकों को वापस किया जा रहा है। ग्राहकों का कहना है कि बाजार में ब्लैक में सिलेंडर आसानी से उपलब्ध हो जा रहा है। इसका प्रमाण होटल, रेस्टोरेंट और फास्ट फूड बेचने वाली दुकानें हैं। यहां घरेलू गैस सिलेंडर का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है लेकिन वास्तविक ग्राहकों को दौड़ाया जा रहा है। इससे ग्राहकों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। महुई की 60 वर्षीय मंजू देवी ने बताया कि कई दिनों से सिलेंडर खत्म है। लाइन में लगने के बाद भी सिलेंडर नहीं मिल रहा है। पिपराइच संवाद सूत्र के अनुसार रात तीन बजे से ही सिलेंडर के लिए लाइन लगाने के बाद भी खाली हाथ वापस जाना पड़ रहा है। भारत उजाला गैस एजेंसी पर वर्तमान में 25 सौ से अधिक सिलेंडरों का बैकलाग है। रोजाना हंगामा हो रहा है। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए एजेंसी पर पुलिस बल भी तैनात करना पड़ा है। होम डिलीवरी की व्यवस्था 12 दिन से ठप है। गोदाम इंचार्ज श्याम सुंदर पांडेय ने बताया कि सात मार्च से 18 मार्च के बीच 12 दिनों में आठ ट्रक से 28 सौ सिलेंडर मिले हैं।

गोरखपुर में रसोई गैस सिलेंडर की भारी किल्लत। ब्लैक मार्केट में 1600 रुपये में बिक रहे सिलेंडर। ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण व्यवस्था पूरी तरह ठप।

एजेंसी के प्रोपराइटर अंशु कुमार सोनकर ने बताया कि रात में ही ग्राहक आ जा रहे हैं इस कारण होम डिलीवरी व्यवस्था शुरू नहीं हो पा रही है। पहले एक ट्रक सिलेंडर से ही काम चल जाता था लेकिन अब बहुत ग्राहक आ रहे हैं। जो ग्राहक पहले एक–दो महीने में कभी–कभार सिलेंडर लेते थे वह भी आने लगे हैं।

खजनी के पल्हीपार से पांच सौ ग्राहक लौटे

खजनी तहसील में भारत गैस की तीन, हिंदुस्तान पेट्रोलियम की एक और इंडेन की पांच गैस एजेंसी हैं लेकिन ग्राहकों को सिलेंडर नहीं मिल पा रहा है। मां दुर्गा भारत पाल्हीपार में पांच सौ ग्राहकों को वापस किया गया। प्रबंधक राकेश रंजन शर्मा ने बताया कि मंगलवार को सिलेंडर का वितरण किया गया। बुधवार को गैस खत्म हो गई थी। अब गुरुवार को वितरण किया जाएगा। अघन इंडेन बिहारी बुजुर्ग में तीन दिन से सिलेंडर न आने से रोजाना सौ से ज्यादा ग्राहक वापस जा रहे हैं। मां दुर्गा एचपीसीएल बारीगांव के प्रबंधक बाकेश ओझा ने बताया कि स्टाक में 297 सिलेंडर हैं। वसु प्रदा इंडेन सर्विस कर्मदेवा के प्रबंधक किरण लता श्रीवास्तव ने बताया कि बुधवार को 53 ग्राहक आए। कृष्णकांत सिंह इंडेन ग्रामीण वितरक बेलघाट से 159 ग्राहकों को सिलेंडर दिया गया। बिंदु इंडेन सर्विस कूरी बाजार के प्रबंधक सुभाष चंद ने बताया कि बुधवार को 91 ग्राहकों को सिलेंडर दिया गया। स्टाक में 301 सिलेंडर है।

देर से खुली एजेंसी, उपभोक्ताओं ने किया हंगामा, कालाबाजारी की शिकायत

नंदिनी इंडेन ग्रामीण वितरक गैस एजेंसी सिकरीगंज का कार्यालय बुधवार को सुबह 10 बजे तक न खुलने के कारण सिलेंडर लेने के लिए खड़े ग्राहकों का गुस्सा फूट पड़ा। ग्राहकों ने जमकर हंगामा किया। खजनी के एसडीएम को जानकारी मिली तो उन्होंने सिलेंडर बांटने के निर्देश दिए। इसके बाद सुबह 10:30 बजे कार्यालय खुला। ग्राहकों ने आरोप लगाया कि एजेंसी पर कालाबाजारियों और प्रभावशाली व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जा रही है।

हरिनाथ, सुनील, जालंधरी देवी, हिमांशु, पिंटू आदि ने बताया कि जनवरी के बाद सिलेंडर नहीं मिला। रणजीत, छेदी, रामनवल, अखिलेश, विक्की, ज्ञान प्रकाश ने बताया कि चार दिन से एजेंसी का चक्कर काट रहे हैं, लेकिन सिलेंडर नहीं मिल पा रहा है। सुमित्रा, धर्मेंद्र राय, ज्योति आदि ने बताया कि नौ महीने का नियम है लेकिन छह महीने में सिलेंडर न लेने पर भी कनेक्शन बंद कर दिया जा रहा है। एजेंसी संचालक मनमानी कर रहे हैं। नंदिनी इंडेन ग्रामीण वितरक गैस एजेंसी सिकरीगंज के संचालक धर्मनाथ जायसवाल ने बताया कि एजेंसी के कर्मचारियों ने रात एक बजे तक काम किया था, इस कारण कार्यालय समय से नहीं खुल सका। भीड़ ज्यादा होने के कारण दिक्कत हो रही है। गांवों में होम डिलीवरी शुरू करा दी गई है। एजेंसी पर 20 हजार ग्राहक पंजीकृत हैं।

बड़े पर्दे पर जीवंत होगी 13 वर्षों की मौन पीड़ा

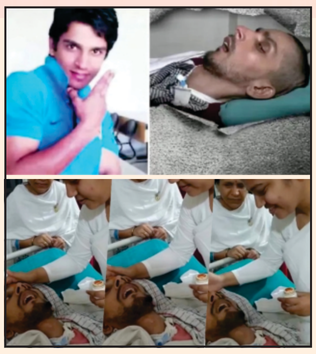

गाजियाबाद के राजनगर स्थित राज एम्पायर सोसायटी निवासी हरीश राणा की 13 वर्षों की मौन पीड़ा को बड़े पर्दे तक पहुंचाने की तैयारी शुरू हो गई है। मुंबई के एक लेखक–निर्माता ने कोमा में जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे हरीश के संघर्ष पर बायोपिक बनाने की इच्छा जताई है।

गाजियाबाद,संवाददाता। गाजियाबाद के हरीश राणा के 13 वर्षों के अंतहीन संघर्ष की कहानी अब सिर्फ अदालतों और अस्पतालों तक ही नहीं रहेगी। हरीश राणा की जिंदगी पर बायोपिक बनाई जा सकती है। मुंबई के एक लेखक ने हरीश की 13 वर्षों की मौन पीड़ा को बड़े पर्दे पर जीवंत करने के लिए वकील से बात की है।
गाजियाबाद के राजनगर स्थित राज एम्पायर सोसायटी निवासी हरीश राणा की 13 वर्षों की मौन पीड़ा को बड़े पर्दे तक पहुंचाने की तैयारी शुरू हो गई है। मुंबई के एक लेखक–निर्माता ने कोमा में जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे हरीश के संघर्ष पर बायोपिक बनाने की इच्छा जताई है।
इस विषय को फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उनके अधिवक्ता मनीष जैन से संपर्क किया है। हालांकि, मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए अधिवक्ता ने निर्माता से कुछ समय इंतजार करने के लिए कहा है। अधिवक्ता ने बताया कि यह कहानी केवल एक बीमारी या कानूनी लड़ाई नहीं, बल्कि एक पिता के साहस, परिवार के धैर्य और न्यायपालिका की संवेदनशीलता की मिसाल है।
सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद हरीश को दिल्ली स्थित एम्स के पैलिएटिव केयर वार्ड में भर्ती कराया गया है, जहां वह असहनीय पीड़ा से धीरे–धीरे मुक्ति की ओर बढ़ रहे हैं। हरीश के पिता अशोक राणा की ओर से लिया गया अंगदान का निर्णय समाज के लिए प्रेरणा बनकर उभरा है। 13 वर्षों तक बेटे को इस स्थिति में देखना परिवार के लिए बेहद कठिन रहा।

चरणबद्ध तरीके से चल रही है प्रक्रिया

इच्छामृत्यु प्रक्रिया के तहत एम्स में भर्ती गाजियाबाद निवासी हरीश राणा को बुधवार को वेंटिलेटर और अन्य गहन जीवनरक्षक उपचार से हटाकर सामान्य बेड पर शिफ्ट कर दिया गया है। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, उनकी स्थिति फिलहाल स्थिर बताई जा रही है।

गोरखपुर राजकुमार हत्याकांड

पोस्टमार्टम करने वाले डाक्टर का बयान दर्ज

संवाददाता, गोरखपुर। प्रापर्टी डीलर व भाजपा से जुड़े राजकुमार चौहान की हत्या चाकुओ से गोदकर की गई थी। बुधवार को पुलिस ने पोस्टमार्टम करने वाले डाक्टर का बयान दर्ज कर इसकी पुष्टि की। घटना में प्रयुक्त चाकू को पुलिस ने आरोपितों के निशानदेही पर बरामद किया। इसके बाद पुलिस ने गिरफ्तार किए गए राज चौहान व विपिन यादव को न्यायालय में पेश करते हुए जेल भेज दिया। अब पुलिस हिरासत में लिए गए पार्षद समेत सात नामजद आरोपितों के भूमिका की जांच कर रही है। घटना स्थल और गांव में लगे सीसी कैमरे के फुटेज के साथ पुलिस उनका सीडिआर निकाल रही है।
मंगलवार सुबह मार्निंग वाक पर निकले राजकुमार की बदमाशों ने हत्या कर दी थी। प्रारंभिक जानकारी में सामने आया था कि हमलावरों ने पहले गोली चलाई और घायल होने के बाद चाकुओं से गोद दिया। हालांकि देर रात प्रेस वार्ता में एसएसपी डा. कौस्तुभ ने फायरिंग की बात पर कुछ नहीं बोला, लेकिन पूछताछ में गिरफ्तार आरोपितों द्वारा कुछ बदमाशों के बारे में तमंचा सप्लाई करने और फायरिंग की बात कहीं गई, जिसके बाद से पुलिस उनकी तलाश में जुटे होने का दावा कर रही है। हालांकि पुलिस के लोग यह भी बता रहे है कि घटना के बाद से फायरिंग और तमंचा सप्लाई करने वाले बदमाशों का लोकेशन नहीं मिल रहा है। इन बसके बीच डाक्टर के दर्ज बयान से पुलिस ने यह साफ कर दिया है कि राजकुमार को गोली नहीं लगी थी। चाकुओं से गोदकर उसकी निर्मम हत्या की गई थी। राजकुमार के शरीर पर कुल 11 चोट धारदार हथियार के मिले है। एसपी नार्थ ज्ञानेंद्र ने बताया कि राजकुमार की हत्या में गिरफ्तार दो आरोपितों को जेल भेज दिया गया। दोनों ने चाकू से गोदकर हत्या की थी, चाकू भी बरामद कर लिया गया है। पूछताछ में सामने आए बदमाशों की तलाश चल रही है।
आरोपितों ने उन्हीं के पास असलहा होने की बात कही है, उनकी गिरफ्तारी के बाद ही पूरे घटना का पर्दाफाश होगा। पुलिस की आठ टीमें गिरफ्तारी व जांच में लगी हैं।

एक जिला–एक पौधा से संरक्षित होगी प्रजाति

गोरखपुर में 'एक जिला–एक पौधा' योजना का शुभारंभ। कुसुम, पनियाला, साल, इमली, आसना प्रजातियां चिह्नित। वन विभाग नर्सरी विकसित कर करेगा बड़े पैमाने पर रोपण।

गोरखपुर,संवाददाता। 'एक जिला–एक उत्पाद' और 'एक जिला–एक व्यंजन' की तर्ज पर अब 'एक जिला–एक पौधा' योजना के माध्यम से विलुप्त होती वनस्पतियों के संरक्षण की कवायद शुरू हो गई है। शासन के निर्देश पर प्रदेश के सभी जिलों से ऐसी पांच पौधों की प्रजातियों की जानकारी मांगी गई है, जिनकी संख्या लगातार घट रही है। इस पहल का उद्देश्य जैव विविधता को संरक्षित करना और स्थानीय स्तर पर उनका रोपण कर पर्यावरण संतुलन को मजबूत करना है। वन विभाग ने गोरखपुर से कुसुम, पनियाला, साल (साखू), इमली और आसना को चिह्नित कर प्रस्ताव भेजा है। विभागीय अधिकारियों के अनुसार, इनमें साल और पनियाला की उपलब्धता में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई है। साल अपनी कीमती इमारती लकड़ी के लिए जाना जाता है, जबकि पनियाला अपने खट्टे–मीठे फल के कारण विशेष पहचान रखता है। जनवरी 2023 में पनियाला को गोरखपुर का जीआइ टैग भी मिल चुका है। योजना के तहत शासन द्वारा अंतिम चयन के बाद वन विभाग संबंधित प्रजातियों की नर्सरी विकसित करेगा। इसमें चयनित पौधों के बीजों से पौधे तैयार किए जाएंगे और फिर बड़े पैमाने पर उनका रोपण कर वृक्ष विकसित किए जाएंगे। जब इनकी संख्या पर्याप्त हो जाएगी, तब अन्य दुर्लभ व विलुप्त हो रही प्रजातियों पर भी इसी माडल के तहत कार्य किया जाएगा। वन विभाग का मानना है कि यह पहल न केवल लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाने में सहायक होगी, बल्कि स्थानीय लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक भी करेगी। डीएफओ विकास यादव ने बताया कि शासन की 'एक जिला–एक पौधा' योजना से विलुप्त हो रहे वृक्षों को नया जीवन मिलेगा। यह योजना पूरे प्रदेश में लागू की गई है और पांच–पांच लुप्तप्राय पौधों के नाम मांगे गए हैं। इसके बाद शासन एक या दो पोधों का नाम तय कर हर जिले को भेजेगा। फिर उनके बीज से पौधा तैयार कर रोपण करते हुए वृक्ष तैयार किया जाएगा।

बढ़ती आबादी व विकास की जद में आने से कम हुई संख्या

वन विभाग के एसडीओ विनीत सिंह ने बताया कि गोरखपुर के लच्छीपुर और नकहा के आसपास के क्षेत्रों में पनियाला के वृक्षों की संख्या सबसे अधिक थी।

भव्य सजे माता मंदिर दर्शन के लिए उमड़ी भीड़

नवरात्र के पहले दिन मंदिरों में लगी भक्तों की कतार

नहीं बढ़ेगा प्रधानों का कार्यकाल

जुलाई के पहले हो जाएंगे प्रदेश में पंचायत चुनाव

लखनऊ,संवाददाता

प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर चल रही अनिश्चितता पर सरकार ने विराम लगा दिया है। पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने स्पष्ट किया कि ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत के चुनाव जुलाई 2026 तक हर हाल में करा लिए जाएंगे। हाईकोर्ट के आदेश का पालन होगा और प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की अड़चन नहीं आने दी जाएगी। राजभर ने बताया कि ग्राम प्रधान, ब्लॉक प्रमुख, जिला पंचायत सदस्य और जिला पंचायत अध्यक्षों के कार्यकाल भले अलग–अलग समय पर समाप्त हो रहे हों, लेकिन किसी का भी कार्यकाल जुलाई से आगे नहीं बढ़ाया जाएगा। इसी समयसीमा को ध्यान में रखते हुए चुनाव कार्यक्रम तय किया जा रहा है। राज्य निर्वाचन आयोग और प्रशासनिक मशीनरी को तैयारी संबंधी निर्देश दिए गए हैं। ओबीसी आरक्षण को लेकर मंत्री ने कहा कि अगली कैबिनेट बैठक में पिछड़ा वर्ग आयोग के गठन को मंजूरी मिल जाएगी। आरक्षण 2011 की जनगणना के आधार पर ही तय होगा और कोई नई गणना नहीं कराई जाएगी। पूर्व में लागू आरक्षण चक्र को ही जारी रखा जाएगा। पंचायती राज विभाग के अधिकारियों के मुताबिक, आयोग की रिपोर्ट मिलते ही सीटों का आरक्षण तय कर चुनाव कार्यक्रम घोषित कर दिया जाएगा।

त्योहार परंपरा के दायरे में मनाएं : योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कहा कि प्रदेश में कानून–व्यवस्था से खिलवाड़ और सौहार्द बिगाड़ने की किसी भी कोशिश को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। त्योहार परंपरा के दायरे में और सद्भाव से मनाए जाएं। अराजकता फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, जो दूसरों के लिए नजीर बने। उन्होंने बाइक स्टंटबाजी पर रोक लगाने के भी निर्देश दिए, ताकि हादसे न हों। त्योहारों को लेकर सभी जिलों के अधिकारियों संग वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में सीएम ने कहा कि हर हाल में शांति, सुरक्षा और अनुशासन सुनिश्चित किया जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं होगी। धार्मिक आयोजनों में पारंपरिक स्वरूप का पालन हो और नई परंपराओं की अनुमति न दी जाए। नवरात्र, अलविदा की नमाज और ईद–उल–फितर के मद्देनजर तैयारियों की समीक्षा करते हुए उन्होंने अधिकारियों को संवेदनशीलता और समन्वय से कार्य करने के निर्देश दिए। मंदिरों में भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा, पेयजल, प्रकाश और स्वास्थ्य सेवाओं के पुख्ता इंतजाम करने तथा संवेदनशील स्थानों पर विशेष सतर्कता बरतने को कहा। लाउडस्पीकर की आवाज निर्धारित मानकों के भीतर रखने के निर्देश भी दिए।

> **यूपी में पंचायत चुनाव को लेकर चल रही दुविधा खत्म हो गई है। पंचायती राज्य मंत्री ने साफ किया है कि हर हाल में जुलाई के पहले यह चुनाव हो जाएंगे।**

बदायूं, मुरादाबाद, रामपुर, गाजियाबाद, जालौन, गोरखपुर, आगरा, जौनपुर, प्रतापगढ़ और प्रयागराज में हाल में हुई आपराधिक घटनाओं का सीएम ने संज्ञान लिया। सीएम ने दोषियों पर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए। चेन स्नेचिंग रोकने के लिए पीआरवी–112 गश्त बढ़ाने को कहा। साथ ही एलपीजी आपूर्ति में कृत्रिम कमी, जमाखोरी और कालाबाजारी पर सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

पहुंचने लगे हैं मतपत्र

यूपी के अमेठी में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव (ग्राम प्रधान, जिला पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्य और ग्राम पंचायत सदस्य पदों) के मतपत्र पहुंच चुके हैं। चुनाव की तैयारियों के बीच, अमेठी जिले में कुल 682 ग्राम पंचायतों के लिए 16,07,921 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। यह मतपत्र पुलिस–पीएसी की सुरक्षा में स्ट्रांग रुम में रखवाए गए हैं। जिले में 682 ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत वार्ड सदस्य के लगभग 8,630 पद, क्षेत्र पंचायत सदस्य के 877 पद और जिला पंचायत सदस्य के 36 पदों पर चुनाव होंगे। चुनाव अप्रैल से जुलाई 2026 के बीच होने की संभावना है। चुनाव आयोग की ओर से उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, जिले में कुल मतदाताओं की संख्या 16,07,921 है। इन मतदाताओं के लिए विभिन्न पदों के लिए पर्याप्त संख्या में मतपत्र भेजे गए हैं।

जिला पंचायत सदस्य के लिए 20,87,000 मतपत्र, क्षेत्र पंचायत सदस्य के लिए 19,63,200 मतपत्र, ग्राम प्रधान के पद के लिए 20,24,500 मतपत्र और ग्राम पंचायत सदस्य के लिए 88,67,000 मतपत्र उपलब्ध कराए गए हैं। इन मतपत्रों की संख्या मतदाताओं की कुल संख्या से अधिक रखी गई है ताकि किसी भी प्रकार की कमी न हो और चुनाव प्रक्रिया सुचारू रूप से संपन्न हो सके। इन मत पत्रों पर चुनाव चिन्ह छापकर संबंधित ग्राम सभाओं में भेजा जाएगा। मतपत्रों को स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रखा गया है। सुरक्षा के लिए डबल लॉक सिस्टम अपनाया गया है। यहां पर पुलिस और पीएसी की तैनाती की गई है। पंचायत चुनावों में इन्हीं मत पत्रों से मत पड़ेंगे। मत पत्रों की गोपनीयता और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। मतदाता सूची का पुनरीक्षण हो चुका है। अनंतिम मतदाता सूची जारी कर दी गई है। छह फरवरी तक इसको लेकर शिकायत की जा सकेगी। छह मार्च को फाइनल मतदाता सूची जारी की जाएगी।

पाठ में पंडित का उल्लेख न होने के बाद भी परीक्षा में आया पंडित शब्द

लखनऊ,संवाददाता। यूपी में एक बार फिर से पंडित शब्द पर विवाद गहरा गया है। इस बार मामला परिषदीय परीक्षाओं में पूछे गए एक सवाल को लेकर है। बेसिक शिक्षा विभाग की परिषदीय परीक्षाओं में आगरा में कक्षा सात में संस्कृत के पेपर में एक सवाल में पंडित शब्द के प्रयोग पर जवाब–तलब किया गया है। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एससीईआरटी) की ओर से वहां के डायट प्राचार्य को पत्र भेजकर पेपर बनाने वाले प्रवक्ता का स्पष्टीकरण मांगा गया है।

प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में सोमवार 16 मार्च से वार्षिक परीक्षाएं शुरू हुई हैं। पेपर जिला स्तर पर डायट तैयार करता है। इसे बीएसए के माध्यम से बंटवाने की व्यवस्था है। इसमें 17 मार्च को आगरा में कक्षा 7 में संस्कृत के पेपर में पूछा गया कि, पहेलिका पाठ के आधार पर वह कौन है जो बिना पैर के दूर तक जाता है और साक्षर है लेकिन पंडित नहीं है। इसके जवाब में चार विकल्प दिए गए हैं।

खास यह कि पाठ में पंडित का जिक्र नहीं है। इसके बाद भी पेपर बनाने में पंडित शब्द का प्रयोग किया गया है। बुधवार को यह पेपर वायरल हुआ, इसे लेकर तरह–तरह के कमेंट किए जाते रहे। इसे देखते हुए एससीईआरटी ने पेपर बनाने वाले प्रवक्ता का स्पष्टीकरण विस्तृत आख्या के साथ उपलब्ध कराने को कहा है।

सत्ता के इशारे पर समाज विशेष का अपमान–अखिलेश

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में फिर समाज विशेष का अपमान हुआ है। इससे साबित हो गया है कि ये सब जानबूझकर सत्ता के इशारे पर हो रहा है। असली सवाल, केवल प्रश्न पर नहीं बल्कि इस बात पर भी उठना चाहिए कि क्या प्रश्न पत्र बनाने वाले लोगों में भी सत्ता के सजातीय लोगों को डाल दिया गया है। अगर जानबूझकर टारगेट किए गए पीड़ित समाज का कोई भी व्यक्ति उस कमेटी में होता तो क्या ऐसा विकल्प बनाया जाता।

आंधी–बारिश के साथ प्रदेश में बदला मौसम

लखनऊ,संवाददाता। यूपी में मौसम बदल गया है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में मौसम ने बुधवार शाम अचानक करवट ली। पूरे प्रदेश में बारिश होगी। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में मौसम ने बुधवार शाम अचानक करवट ली। देर शाम दिल्ली से सटे जिलों नोएडा, गाजियाबाद आदि में झोंकेदार हवाओं व गरज–चमक के साथ बारिश शुरू हो गई। मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मौसम का यह बदलाव 21 मार्च तक जारी रहेगा। इस दौरान बारिश वाले क्षेत्रों में 40 से 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने की संभावना है। तेज हवाओं और बारिश के असर से प्रदेशभर में अगले दो दिनों में अधिकतम तापमान में 5 से 7 डिग्री सेल्सियस तक गिरावट के संकेत हैं।

पश्चिमी यूपी व मध्यांचल के 23 जिलों में गरज–चमक के साथ बारिश का पूर्वानुमान जारी किया गया है, जबकि सहारनपुर, शामली और मुजफ्फरनगर समेत छह जिलों में ओलावृष्टि का अलर्ट है। बुधवार को बांदा सबसे गर्म रहा, जहां अधिकतम तापमान 39.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक 19 मार्च से बदलाव के साथ 20 मार्च को प्रदेशभर में तेज हवाओं और बारिश का व्यापक असर देखने को मिलेगा।

रसोई घरों तक पहुंची ईरान संकट की आंच

10 रुपये महंगा हुआ खाने वाला तेल, इनके दाम भी बढ़ेंगे

लखनऊ,संवाददाता। ईरान में चल रहे संकट का असर यूपी की रसोई घरों तक पहुंच रहा है। गैस सिलिंडर के बाद अब खाने वाले तेल के दाम बढ़ गए हैं। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव का असर अब आम आदमी की रसोई तक पहुंच गया है। कच्चे तेल (क्रूड ऑयल) की कीमतों में तेज उछाल और वैश्विक सप्लाई चेन पर दबाव के कारण देश में खाद्य तेलों की कीमतों में लगातार वृद्धि हो रही है। पिछले 10 दिनों में रिफाइंड और सरसों तेल के दाम थोक बाजार में 7 से 12 रुपये प्रति लीटर तक बढ़ चुके हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि अंतरराष्ट्रीय हालात ऐसे ही बने रहे तो कीमतों में और तेजी आ सकती है।

बायोडीजल की दौड़ से घटा पाम ऑयल

इंडोनेशिया ने बायोडीजल मिश्रण को 40 से बढ़ाकर 50 (बी50) करने की दिशा में तेजी दिखाई है।

इससे पाम ऑयल का बड़ा हिस्सा घरेलू ईंधन खपत में जा रहा है और निर्यात घट रहा है। परिणामस्वरूप वैश्विक बाजार में पाम ऑयल की कमी और कीमतों में उछाल देखने को मिल रहा है। पाम ऑयल महंगा होने से रिफाइंड तेल की लागत बढ़ी है, वहीं सोयाबीन और सूरजमुखी तेल के दाम भी चढ़ गए हैं। भारत जैसे आयात–निर्भर देश में इसका असर और अधिक दिखाई दे रहा है।

युद्ध और मालभाड़ा भी जिम्मेदार

मध्य–पूर्व संघर्ष के कारण शिपिंग रूट प्रभावित हुए हैं, जिससे मालभाड़ा करीब 25 तक बढ़ गया है। इसके अलावा कोयले की कीमतों में 50, प्लास्टिक पैकेजिंग में 60 तक वृद्धि और टिन व अन्य पैकिंग सामग्री के महंगे होने से उत्पादन लागत पर दबाव बढ़ा है। डॉलर की मजबूती ने आयात लागत को और बढ़ा दिया है। कुल मिलाकर खाद्य तेल उद्योग की लागत में 20–25 तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

बाजार में तेजी का असर

थोक कारोबारियों के अनुसार सरसों तेल का भाव 132 रुपये से बढ़कर 140 रुपये प्रति लीटर हो गया है। वहीं देश के कई हिस्सों में सूरजमुखी और अन्य तेलों के दाम 10–15 रुपये प्रति लीटर तक बढ़ चुके हैं। उत्तर प्रदेश खाद्य तेल खपत के मामले में देश के अग्रणी राज्यों में है।

'धुरंधर 2 के कायल हुए सेलिब्रिटी

अल्लू अर्जुन, अनन्या पांडे से लेकर कार्तिक आर्यन ने की फिल्म की जमकर तारीफ

एंटरटेनमेंट डेस्क। 'धुरंधर द रिवेंज' फिल्म रिलीज हो चुकी है। अब सेलेब्स के इस फिल्म पर रिएक्शन सामने आ रहे हैं। आइए जानते हैं बॉलीवुड एक्टर्स का इस फिल्म पर क्या कहना है। धुरंधर का सीक्वल धुरंधर द रिवेंज सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। फिल्म की रिलीज से पहले ही फैंस इसे लेकर काफी एक्साइटेड थे। एडवांस बुकिंग में भी फिल्म ने रिकॉर्ड तोड़ कमाई की है। अब कुछ बॉलीवुड सेलेब्स भी फिल्म देखकर आए हैं, जिन्होंने अपने रिएक्शन शेयर किए हैं। आइए जानते हैं सेलेब्स का इस फिल्म को लेकर क्या विचार है।

राम गोपाल वर्मा

डायरेक्टर राम गोपाल वर्मा ने भी एक्स पर फिल्म 'धुरंधर 2' को लेकर रिएक्शन दिया है। फिल्म को लेकर देर रात उन्होंने ट्वीट करते हुए लिखा, 'जिन लोगों ने भी आज फिल्म देखी, उन सभी ने मुझसे कहा कि 'धुरंधर' को सिर्फ पसंद ही नहीं करते हैं, इस फिल्म से शादी भी करना चाहते हैं।

फुलवा से मिली थी पहचान, सोशल मीडिया पर हैं करोड़ों फालोअर्स

जन्नत जुबैर ने अपने करियर की शुरुआत बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट टीवी शो फुलवा से की थी। इस शो से उन्हें घर–घर में पहचान मिली। इसके बाद उन्होंने काशी और तू आशिकी जैसे पॉपुलर शोज में लीड रोल निभाया। जन्नत ने बॉलीवुड फिल्म हिचकी में भी काम किया है और वे खतरों के खिलाड़ी 12 जैसे रियलिटी शो का हिस्सा रही हैं। जन्नत भारत की सबसे ज्यादा फॉलो की जाने वाली डिजिटल इन्फ्लुएंसर में से एक हैं, जिनके सोशल मीडिया पर करोड़ों चाहने वाले हैं।

भाई अयान भी गली बॉय में आ नजर चुके

जन्नत के छोटे भाई अयान जुबैर ने ऐतिहासिक शो श्जोधा अकबरश में छोटे सलीम का किरदार निभाकर अपना करियर शुरू किया था। इसके बाद वे श्चक्रवर्ती अशोक सम्राट और महाबली हनुमान जैसे शोज में दिखे। फिल्मों की बात करें तो अयान रणवीर सिंह की गली बॉय और टाइगर श्रॉफ की बागी 3 जैसी बड़ी फिल्मों में नजर आ चुके हैं। अयान अपनी बहन जन्नत के साथ अक्सर सोशल मीडिया वीडियो में नजर आते हैं।

आरोपियों ने पनवेल में कार का पीछा कर हमला किया

जन्नत जुबैर और अयान के साथ हाईवे पर मारपीट

दिल्ली,एजेंसी। टीवी एक्ट्रेस जन्नत जुबैर और उनके छोटे भाई अयान जुबैर के साथ नवी मुंबई के पनवेल में मारपीट की घटना हुई है। सोमवार को दिनदहाड़े हाईवे पर कुछ लोगों ने उनकी गाड़ी का पीछा किया और मारपीट की। जन्नत ने सोशल मीडिया पर एक ऑफिशियल स्टेटमेंट जारी कर इस बात की जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि अब वे दोनों सुरक्षित हैं और पुलिस इस मामले की जांच कर रही है।

हम सुरक्षित हैं, अफवाह न फैलाएं

स्टेटमेंट में कहा गया की, हम सबको अपडेट देना चाहते हैं कि जन्नत और अयान के साथ कल हाईवे पर दिनदहाड़े मारपीट और पीछा करने की घटना हुई। अभी पुलिस अथॉरिटीज एक्टिवली मामले को देख रही हैं और जांच जारी है। जन्नत और अयान अब पूरी तरह सुरक्षित हैं। हम आपकी चिंता और सपोर्ट के लिए शुक्रिया अदा करते हैं। उन्होंने फैंस से अपील की कि वे इस मामले में किसी भी तरह की अटकलें न लगाएं और बिना पुख्ता जानकारी के कुछ भी शेयर न करें। फिलहाल पुलिस सीसीटीवी फुटेज और अन्य सबूतों के जरिए आरोपियों की तलाश कर रही है।

चोटों का साया: फ्रेंचाइजी का बिगड़ा समीकरण, दो टीमें सबसे ज्यादा प्रभावित

खिलाड़ी	टीम
हर्षित राणा	केकेआर
नाथन एलिस	सीएसके
सैम करन	राजस्थान रॉयल्स
जैक एडवर्ड्स	सनराइजर्स हैदराबाद

स्पोर्ट्स डेस्क,। आईपीएल 2026 की शुरुआत से पहले ही खिलाड़ियों की चोटों ने फ्रेंचाइजी की चिंताएं बढ़ा दी हैं। केकेआर हो या सनराइजर्स हैदराबाद, लगभग हर टीम में कोई ना कोई खिलाड़ी चोटिल है जिस कारण टीमों का संयोजन बिगड़ रहा है। खिलाड़ियों की चोटों ने आईपीएल टीमों की चिंता बढ़ा दी है। 28 मार्च से शुरू होने वाले टूर्नामेंट से पहले हर्षित राणा और सैम करन समेत चार खिलाड़ी पूरे सत्र से बाहर हो गए हैं, जबकि 11 खिलाड़ी शुरुआती मैचों में नहीं खेलेंगे।

इनमें ज्यादातर विदेशी खिलाड़ी हैं। चोटिल खिलाड़ियों में तेज गेंदबाज और ऑलराउंडर की संख्या अधिक है। चोटों का असर सबसे ज्यादा ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों पर है। इनमें सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस पहले दौर के मैचों में नहीं खेलेंगे। उनकी जगह ईशान किशन को कप्तानी सौंपी गई है।

हेजलवुड का खेलना संदिग्ध

दिल्ली कैपिटल्स के मिचेल स्टार्क और चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बंगलूरू (आरसीबी) के जोश हेजलवुड का टूर्नामेंट के शुरुआती दौर में खेलना संदिग्ध है। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज नाथन एलिस पूरे टूर्नामेंट से और ऑलराउंडर मैथ्यू शॉर्ट शुरुआती मैचों से बाहर हो गए हैं। राजस्थान रॉयल्स के लिए शुक्रवार को निराशाजनक खबर आई, जब उसके तेज गेंदबाज ऑलराउंडर सैम करन चोट की वजह से पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गए। पंजाब किंग्स और चेन्नई के लिए खेल चुके 27 वर्ष के करन को आईपीएल 2023 सत्र में पंजाब ने उन्हें 18.5 करोड़ रुपये में लिया था, लेकिन चोट के कारण वह बाहर ही रहे।

इस साल राजस्थान ने उन्हें ट्रेड में कप्तान संजू सैमसन की जगह चेन्नई से अपने साथ जोड़ा था। पंजाब किंग्स की टीम में शामिल न्यूजीलैंड के लॉकी फर्ग्यूसन चोटिल नहीं हैं, लेकिन वह अपने परिवार को समय देने के लिए करीब आधे टूर्नामेंट में शामिल नहीं हो सकेंगे। खिलाड़ियों की चोटों और शुरुआती मैचों से बाहर होने की वजह से फ्रेंचाइजियों का टीम संयोजन गड़बड़ा गया है।

हैदराबाद और कोलकाता सबसे ज्यादा प्रभावित

खिलाड़ियों के बाहर होने का सबसे ज्यादा असर हैदराबाद और कोलकाता पर पड़ा है। हैदराबाद के गेंदबाजी ऑलराउंडर ऑस्ट्रेलिया के जैक एडवर्ड्स पूरे टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं, तो कप्तान पैट कमिंस और ईशान मलिंगा पहले दौर के मैचों में नहीं खेल पाएंगे। कमिंस का आगे खेलना भी संदिग्ध है। वह टी20 विश्वकप में भी नहीं खेले थे। कमिंस का ध्यान 2027 वनडे विश्वकप की तैयारी और टेस्ट मैचों पर है। कोलकाता को सबसे बड़ा झटका बांग्लादेशी पेसर मुस्तफिजुर रहमान को बाहर करने के कारण लगा था। मुस्तफिजुर की जगह कोलकाता ने जिम्बाब्वे के ब्लेसिंग मुजरबानी को शामिल किया है। अब हर्षित राणा का पूरे टूर्नामेंट से बाहर होना कोलकाता के लिए बड़ा झटका है। कोलकाता के ही तेज गेंदबाज मथीशा पथिराना को श्रीलंकाई बोर्ड से एनओसी का इंतजार है।

दिल्ली को बड़ा झटका

अपने पहले खिताब के लिए प्रयासरत दिल्ली कैपिटल्स की तैयारियों को बड़ा झटका लगा है। उसके मुख्य तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क शुरुआती चरण में नहीं खेल सकेंगे। अक्षर पटेल की कप्तानी में इस टीम को नए सिरे से अपनी योजनाओं को तैयार करना होगा। वहीं, खिताब की रक्षा करने के प्रतिबद्ध आरसीबी के प्रमुख गेंदबाज जोश हेजलवुड शुरुआती मैचों से बाहर रहेंगे। उनका पूरे टूर्नामेंट में ही खेलना संदिग्ध है। वह ऑस्ट्रेलिया के लिए टी20 विश्वकप भी नहीं खेले थे।

चार बल्लेबाजों के नाम एक आईपीएल सीजन में 800+ रन बनाने का रिकार्ड

खिलाड़ी	टीम	मैच	रन	सीजन
विराट कोहली	आरसीबी	16	973	2016
शुभमन गिल	गुजरात टाइटंस	17	890	2023
जोस बटलर	राजस्थान रॉयल्स	17	863	2022
डेविड वॉर्नर	सनराइजर्स हैदराबाद	17	848	2016

स्पोर्ट्स डेस्क। आईपीएल 2026 का सीजन शुरू होने में अब ज्यादा समय शेष नहीं रह गया है। प्रशंसकों को एक बार फिर से टूर्नामेंट में बड़े स्कोर देखने की उम्मीद है। इस टूर्नामेंट के इतिहास में चार ही बल्लेबाज ऐसे हैं, जिन्होंने एक सीजन में 800 से ज्यादा रन बनाए हैं। आइए जानते हैं उन चार बल्लेबाजों के बारे में...आईपीएल के बीते 18 सीजन में खिलाड़ियों ने कई रिकॉर्ड्स बनाए और तोड़े हैं। इस दौरान बल्लेबाजों ने जमकर चौके और छक्कों की बरसात करते हुए फैंस का खूब मनोरंजन किया। आइए, आईपीएल इतिहास के उन चार खिलाड़ियों के बारे में जानते हैं, जिन्होंने एक ही सीजन में 800 से ज्यादा रन कूटे।

विराट कोहली: इस बल्लेबाज ने अब तक सभी 18 सीजन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की ओर से खेले हैं। कोहली ने आईपीएल 2016 में 16 मैच खेलते हुए 81.08 की औसत के साथ कुल 973 रन बनाए थे। इस दौरान उन्होंने चार शतक और सात अर्धशतक लगाए। कोहली एक आईपीएल सीजन में सर्वाधिक शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में संयुक्त रूप से नंबर–1 हैं। उन्होंने आईपीएल 2016 में 38 छक्के और 83 चौके लगाए थे। विराट कोहली आईपीएल इतिहास में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। कोहली ने साल 2008 से अब तक कुल 267 आईपीएल मैच खेले, जिसमें 39.54 की औसत से 8,661 रन बनाए। कोहली सर्वाधिक आठ आईपीएल शतक लगाने वाले खिलाड़ी भी हैं। इस लीग में उनके बल्ले से कुल 291 छक्के और 771 चौके निकले हैं।

डेविड वॉर्नर: सनराइजर्स हैदराबाद की तरफ से खेलते हुए वॉर्नर ने आईपीएल 2016 में 60.57 की औसत के साथ 848 रन बनाए थे। इस दौरान उनके बल्ले से नौ अर्धशतक निकले। आईपीएल 2016 में वॉर्नर ने 31 छक्के और 88 चौके लगाए थे।

जून में आयरलैंड दौरे पर जाएगी भारतीय टीम

स्पोर्ट्स डेस्क। भारतीय पुरुष टीम इस साल जून में आयरलैंड का दौरा करेगी। इस दौरान टीम आयरलैंड के खिलाफ दो मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने इस सीरीज का कार्यक्रम घोषित कर दिया है। इससे पहले भारत 2018, 2022 और 2023 में भी आयरलैंड का दौरा कर चुका है। यानी आठ साल में कुल तीन बार टीम आयरलैंड दौरे पर गई है।

बेलफास्ट में खेले जाएंगे मुकाबले

सीरीज के दोनों मुकाबले बेलफास्ट में होंगे। बीसीसीआई ने बताया कि 2007 के बाद पहली बार होगा जब भारत बेलफास्ट में मुकाबले खेलेगा। भारत और आयरलैंड के बीच पहला टी20 26 जून और दूसरा टी20 28 जून 2026 को खेला जाएगा। भारतीय समयानुसार मैच शाम साढ़े सात बजे से शुरू होंगे।

भारत और आयरलैंड के बीच टी20 सीरीज का कार्यक्रम

तारीख	मैच	स्थान
26 जून	पहला टी20	बेलफास्ट
28 जून	दूसरा टी20	बेलफास्ट

अफगानिस्तान–इंग्लैंड से भी खेलनी है सीरीज

इससे पहले आयरलैंड हाई परफोर्मेंस निदेशक ग्राहम वेस्ट ने इस सीरीज की पुष्टि की थी, लेकिन अब बीसीसीआई ने भी आधिकारिक तौर पर इसका एलान कर दिया है।

आईपीएल 2026 के बाद भारतीय टीम जून में अफगानिस्तान के खिलाफ एक टेस्ट और तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। इसके बाद टीम पांच टी20 और तीन वनडे मैचों की सीरीज के लिए इंग्लैंड दौरे पर जाएगी। यह दौरान एक से 19 जुलाई तक होगा। वेस्ट ने कहा था, टी20 विश्व कप 2028 का क्वालिफिकेशन पक्का है, इसलिए पॉल स्टर्लिंग ने टी20 कप्तान का पद छोड़ने का फैसला लिया है। इससे नए कप्तान को अपनी शैली और नीति के तहत चलने का मौका मिलेगा जिसकी शुरुआत जून में भारत के खिलाफ होने वाली सीरीज से होगी।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित।
पिनः– 273003
UPHIN/2023/90814
बृजेन्द्र कुमार
मो. नं. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद–विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।

'मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था', 34 साल पुराने मैच को लेकर कपिल देव ने मानी अपनी गलती

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और देश को पहला वर्ल्ड कप दिलाने वाले कपिल देव ने अपने करियर के एक बहुत पुराने मैच की यादें ताजा करते हुए अपनी गलती ...

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत को 1983 में पहला वर्ल्ड कप दिलाने वाले कप्तान कपिल देव ने कई साल पहले ऐसा कुछ किया था जिसका उन्हें अब पछतावा होता है। कपिल ने सरेआम इस बात को कबूल भी किया है कि साल 1992 में एक मैच के दौरान उनसे गलती हो गई थी, लेकिन वो उस पल की गरमाहट को देखते हुए हुआ था। बात दिसंबर 1992 की है। भारतीय क्रिकेट टीम साउथ अफ्रीका के दौरे पर थी और वनडे सीरीज खेल रही थी। सीरीज का दूसरा वनडे पोर्ट एलिजाबेथ के सेंट जॉर्ज पार्क में खेला जा रहा था। इस मैच में कपिल ने साउथ अफ्रीकी बल्लेबाज पीटर कर्स्टन को मांकड आउट यानी नॉन स्ट्राइकर छोर पर रन आउट कर दिया था। इस दौरान कपिल काफी गुस्से में थे।

'तीन बार दी थी वॉर्निंग'

कपिल ने कहा कि उन्होंने कर्स्टन को तीन बार चेतावनी दी थी, लेकिन वह माने नहीं तो उन्होंने

मांकड आउट करने का फैसला किया। प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया (पीजीटीआई) के अध्यक्ष कपिल ने शुक्रवार को इस घटना को याद किया। कपिल पीजीटीआई और एक्सिस बैंक के साथ हुए करार की घोषणा के लिए आयोजित कार्यक्रम में भारतीय टीम के पूर्व मैनेजर अमृत माथुर से बात कर रहे थे। माथुर ने जब इस दौरे का एक किस्सा सुनाया तो कपिल को मांकड आउट का किस्सा याद आ गया और फिर उन्होंने पूरी कहानी बयां कर दी। कपिल ने कहा, "मैं जब भी गेंद डालने की कोशिश कर रहा था तो नॉन स्ट्राइकर छोर पर खड़ा बल्लेबाज बार–बार रन चुराने के लिए क्रीज से बाहर जा रहा था। मैंने उसे एक बार चेतावनी दी। अश्विन ने जो किया उससे पहले मैंने किया और उससे पहले वीनू मांकड ने किया।" उन्होंने कहा, "मैंने पीटर कर्स्टन से कहा कि ये मत करो क्योंकि मैं जब जम्प कर रहा हूं तो तुम साइड में मेरी नजरों में आ रहे हो जिससे मुझे परेशानी हो रही है। तो उसने कहा कि मैं जोंटी रोड्स के साथ खेल रहा हूं तो मुझे तैयार रहना होगा। उन्होंने दूसरी बार फिर किया। हमारी टीम मीटिंग हुई और मैंने कहा कि मैं ऐसा करूंगा तो सभी ने कहा ठीक है कर दो।"कपिल ने आगे बताया, "हालांकि, मैं कहता हूं कि मेरी गलती थी। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन मैंने उसे तीन बार चेतावनी दे दी थी। वह इसे लेकर काफी गुस्सा थे कि मैंने ऐसा क्यों कर दिया।"